



'विदेह' १३१ म अंक ०१ जून २०१३ (वर्ष ७ मास ७७ अंक १३१)

१६म सगव बाति दीप जवय- बिरुनि आ लघु कथाक सगव बाति पाठ- दलिक १३ जून २०१३ क संध्यासँ १७ जून २०१३ क भोव धरि- स्थान- गाम ँवहा (जिला मधुबनी) संयोजक- श्री उमेश पासराण । रससँ एनिहाव एम.ए. ३.१ पव निर्मलीसँ ३ कि.मी. दूर ततहा टोकपव उतक आ ओतएसँ रणगामा टोक होगत ँवहा गाम ३ कि.मी. छै । ट्रेनसँ एनिहाव निर्मली सृशेषपव उतक, ओतएसँ ततहा टोक आ रणगामा टोक होगत ँवहा गाम उमेश पासराण जीक दवरञ्जापव संध्या ७ रजेसँ आयोजन छै । अहाँक उपस्थिति प्रार्थनीय । संपर्क श्री उमेश पासराण फोन ९९९३१२३३९४४

ए अकसे अछि:-

## १. संपादकीय संदेश

### २. गद्य

—



२.१. कान्छी कामाचर्या- वसुधैव कुटुम्बकम्



२.२. रिश्दमेव ठाकुर- बिरुनि कथा: टैन्सेशरी दुर्भाग्या घुसखोव तथोत्त

—



२.३. आशीय अचर्या- बिरुनि कथा- भविष्य



२.४. जगदीश प्रसाद यादव-तीन ठी वषकथा-किये ल/ दूअरे बिसेरनि

३. पद्य



३.१. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनित'-गजन १-४



३.२. बिनीता सा-रवदास/तय्यकू दिसम पव २.



शोभिनिष्कमी टोदवी-गतिभ्रमर.



लेशामिका

रया-अहाँक गाम कत२ अछि ? / पाहल अप्पनि ग्राम भेल !



३.३. अनित मखिक-गजन



३.४. रवि दूकन्द पाठक- गजन २.



सुरेन्द्र शर्मा -दूदा कवरौ की ? / रँछेही/ शरका महेश्वरानी/ छ्वाड

बिदेह बुतन अंक भाषाशाक बचनलेखन-



बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साओ



## VI DEHA MAI THI LI BOOKS FREE DOWNLOAD SITE

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ( ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपव उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal ( in Braille, Tirhuta and Devanagari versions ) are available for pdf download at the following link.

बिदेह अ-पत्रिकाक सभ्ठा प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह अ-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह अ-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक



बिदेह आर.एस.एस.फीड एनीमेटरकेँ अपन साइट/ ब्लागपव लगौड ।



ब्लाग "लेखक" पव "एड गाडजेट" मे "फीड" सेलेक्ट कए "फीड यू.आर.एल." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> टाँगए केनासँ सेहो बिदेह फीड प्राप्त कए सकैत छी । गुगल बीडवमे पठराँ लेन <http://reader.google.com/> पव जा कए Add a Subscription बटन दिक कए आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कए आ Add बटन दराँड ।



Join official Videha facebook group.



Join Videha googl egr oups



बिदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



मैथिली देरनागरी रा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहन छी, (cannot see/write Maitthili in Devanagari / Mthilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीटाँक लिंक सत पब जाऊँ । संगहि रिदेहक सुँत मैथिली भाषापाक/ बचना लेखनक नर-पुवान अरु पढ़ू ।  
<http://devanagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँगमे ऑनलाइन देरनागरी टाँगप कक, रीँगसँ कापी कक आ रई डाक्यूमेण्टमे पोस्ट कए रई फाँगकेँ सेर कक । विशेषे ज्ञानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब सम्पर्क कक ।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maitthili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maitthili e magazine in .pdf format and Maitthili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. रिदेहक पुवान अरु आँडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सतक फाँग सत (उँचावा, रई सुँत साव आँ दुराँकित मँहि सहित) डाँडनजोड कवरौक हेतु नीटाँक लिंक पब जाऊँ ।

### VIDEHA ARCHIVE रिदेह आँकाँगर



जातिवीर्युव पुरी महाकरि रिद्यापति । भावत आँ लपानक मारुँमे पसवत मिथिलाक धवती प्राँटिन कानहिसँ महाण पुँकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महाण पुँकय ओ महिना लोकनिक चित्र मिथिला बने मे देखू ।



शौबी-शिकवक पानरुँ कानक मुँति, एहिमे मिथिलाक्षरमे (१२०० रर्य पुरीक) अतिनेख अँकित अछि । मिथिलाक भावत आँ लपानक मारुँमे पसवत एहि तबहक अत्याँच प्राँटिन आँ नर सुँगए, चित्र, अतिनेख आँ मुँतिकनाक हेतु देखू मिथिलाक खोज



मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, सम्पर्क, खस्यण संगति बिदेहक सर्ट-गजल आ न्यूज सर्भिस आ मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित रेसमागष्ट सभक समग्र संकलनक लेल देखु **बिदेह सूचना सर्पक**  
**खस्यण**

बिदेह ज्ञानरुतक डिस्कमन होबकपब जाई ।

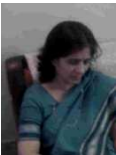
"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानरुत) पब जाई ।

संपादकीय

१६म सगव वाति दीप जवय- बिलि आ नघु कथाक सगव वाति पाठ- दिनाक १३ जून २०१३ क संध्यासँ १३ जून २०१३ क लेब धरि- स्थान- गाम ठुवहा (जिला मधुबनी) संयोजक- श्री उमेश पासराण । रससँ एनिहाब एन.एच. ३१ पब निर्मलीसँ ३ कि.मी. दूर ततहा टोकपब उतक आ ओतएसँ रणगामा टोक होगत ठुवहा गाम ३ कि.मी. छै । क्षेत्रसँ एनिहाब निर्मली स्थानपब उतक, ओतएसँ ततहा टोक आ रणगामा टोक होगत ठुवहा गाम उमेश पासराण जीक दरबन्जापब संध्या ७ बजेसँ आयोजन छै । अहाँक उपस्थिति प्रार्थनीय । सर्पक श्री उमेश पासराण होल ९९९३२३३९८८

**ए बलापब अपन सतब [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पाछै ।**

गद्य



२.१. कान्चिना कामाचर्या- वधु कथा- घुषव तारु



२.२. बिन्दुधर शुकल- बिलि कथा: ठेनामेशी दुर्भाग्या घुसखोवा तथालत

—



२.३. आशीष अलकृष्ण-रिहति कथा-भरिष



२.४. जुगदीप प्रसाद यादव-तीन ठी वधुकरा-कियो ल/ झुगरो बिसेरनि



कामिनी कामायनी

**वधुकरा-**

**घुगरो अरु**

छोठकी काकी काहि बातिअ अणन शिवका बुधा के मोडव मे उमिनरहि । पवात भेल रूटीदाय स रँजनीह 'गे खूबगुटी, चनमे गे रँटा, पोखरि स ग पखरि आग । जुखन नामे खूबगुटी पड़ल डन त रूटी दाय शीत कोना बहितिथि, सदी खन सरँ ठाम जे रौ जेन रँकन पाँट जौ रँवखक उमरि । 'चनु', ओ हठ दनी गोठवस खेलेनाय छोड़ि जेरौ जेन दनु ठंग पठकेत उठन । एक हाथ मे पीठना आ दोसर मे अनननियम के काबी खँखँ, पिचकन पाचकनछोठकी डेकटी मे उमिनन बुधा । भरि रँठ उठैत रँसेत बहनी, चन ल होय डन नीक स, अहि मया आह, उँह करैत अणन जुगक थिम्मा, गप्प सप्प रँटैत जा बहन डनी । 'ओ जुग डन, रँमनली रूटी, हार सरँहक किओ पौव ल देखल होयत, टोखँट स रँहवि पएव बाधि दी कबव मजान ? सरँ दनाय त रूँड । सरँ पकड़ल, । रूँड पवनिया के कतेक प्रतिष्ठा, कतेक जेहाज । ओ आवास ओ सुख आरँ कतय, कनिजुगक पाग स आरँ त ल तेहन धवतिअ उँगजे डै, माने जानक रँवकति डै, लोक सेहो तेहन खरिस त गेले, खेती छोड़ि लोकबी कवय नागन अडि । नाजो धाक लै रँचले, दनाय प कोना रूँड लै रँचनेथ, घरे घब चुनली तव पकथ सरँ घुसणाए सुक कबी देनके । तहिया कमिया रँहुरिया दवरञ्जा की, थिड़किओ धरि स रँहवि हूनकी मावरँ स पवहेज करैत डन, आरँ त, की पोखेव, की ग्णावकत लै पौँठ ओकव सरँहक ।

'आ ओ जे मसुद पव रँनी डुधि, हूनक ससुव रँड गवरँ, एतेक गवरँ जे पनि भवनी धरि लै बाधि सकेत डनिह, 'दुदा अनन एतेक जे तेसले पहवि बाति उँगी क पोखवी, ग्णाव स पाणि रँना काज हविडा लेत डनिह । पुतौहो एहेल सुशीन भेठनरहि, 'दुदा आरँ हूनके पुतौह के देखली, गङ्गा म्या, घव रँना कत दन की दन कले डै, 'कोठ पहिव क रूँले डै मोगी' । 'एक रँव जुखन ओ गप्प सुक



कवी दङ्गाथ ,त नगरे ले करे की ,कोला रैठा रूतक नग मे छहि की कोला चेतन । भाय भाय रैठ रैठले जागथ । जौं किउ नहिउ होय सुनए रौना तगयो हुनकव रहए टालि ।

“ओह गे रैठा ,लौ हाथ पकड़ । गे,,एव मे रैस्या लागि गेले ,उ हो हो ,अ ह ह ह ,,महादेर गी की केनहू । हाथ त हुनक पकडरै पडले ,बुधा रौना रौसन सेहो माथ प उठरैय पडले “ह चनु आरै , एतेक कथ्र होय अछि ,खुतोह ले पखारि देती” । खुतोह के नाम प हुनका एड़ि के गवमी मगज प पहुँच गेनही “माव रौदनि छुतहड़ि या के , हमार बुधा धोत की उ अण्ण गजेड़ि तंजोड़ि रौपक सावा निगत ,” ।

पौखरिक घाँट प ठाँग पसारि काकी गतमीणन म रैसेत रैजनी “ना गे रैठा ,रौसन ना । तसनी म बुधा उँनष्टि,ओहि मे पाणि भवि नग मे बाधि जेनथि आ बुधा प चुक म पाणि ध ध क पीठना म पीठना नगनिह । “काकी रूढ़ मे गी पीयव बुधा ? “गे टुंग वह रैठी देनक ; देखे छै जे सुबकष्ट रूढ़ रौसन पञ्जी रौनी ,केहेन डाप रौना बुधा पहिबति अछि ।

“काकी , हुदा बुधा मे कनिको जान नहि, जे दिन ले चव रौजि जायत ,दोसव कीन नीअ । “ह गे तोले रौप हमार कमा क पठा देता । गर्ब, हमार रौप किए पाए पठौता ,अण्ण जे कोसन वखल छी गार्डि क से कोन दिन जेन । काकी भयंकव तमना गेनी “तोले नाणा देल अछि कोसन गार्डि क बाखन जेन । रूँटिदाय टुंग त गेनिह ।

छैहूँ धरि रस्र उँठा क ,घाँठक तेसव चाकि मीढ़ी प ठाँठ बुधा के एक छोब एक हाथ मे पकडनी ,आ शैय के जूमा क पाणि मे फेकननि,बुधा छुता जका फुलि गेले ,तहन दुय हाथ म नहू नहू छेष्ट करैत ,दुय हाथे गारि क पाणि रैहनेथि । “हरे वाम ,हरे वाम करैत पाणि म रौहव भेनी । हेव बुधा रौना रौसन आ पीठना रूँटि दाय के थमा देनथी ।

आपे रौँठ पहुँचन हेतीह कि बुधिया दौगन आरैत छन ‘यए दाय ,जन्दी टनियो रैड़का गाम रौना पीसा अनथीनह । काकी एक दमे टिहूक उँठनी ‘लौंग म्या ,जूब्रम भेन आरै ? की कर की नही कर ,पाछन एना हे ,दनाल प रौसन हेताह , कोन रौँठे जायरँ आँगन नुओ नीक ले पहिबल छी’ । रूँटिदाय हुनक समझा के समाधान करैत रैजनी “हमार रौड़ि दल टलि जायरँ । आ काकी पड़रैड़ि या रौँठ म ओकव रौड़ि के गेँठ देराव कहूना क पकड़ि पकडि अण्ण आँगन मे पगसन छनिह ।

“की काकी पाछन गेना ? “ह गे ,कखल गेनथि । ओ बाज काज रौना लोक हुनका पनथति छनि सवोजक रँव जका गीहिकिब त क मस्रव क कप्पाव प रौसरौ के’ ओ त करवो रँवियातीमे आयन छना त एक बती मस्रव क हेम फेकन जेरँय टलि आयन छना ,एक जोष्टी पाणि पिनथि ,चावी ठाँ दजीनी सुगावी आ, दु जोड़ जलहुँ रँस ,आ जायत बहना’ ।

ओ ओसावा प अण्ण बुधा के सवियारैत रँस बहनी ‘की कहिएङ्ग रँहिल । गी सौवार्ठ रौनी निवामी , हमार जिरेय नही देत ,की पाछन ,की पड़क ,गी अरुँठा रैज्जवि थमा दैत अछि ,देथियो ,,आय हेव तानस रँस कवी हुँह फुलोले अन्हावघर मे श्रेष्ठफनिया देल पड़न अछि, दुनियाँ भवि के गरिओनक ,फुल्लति फुल्लति कवी देनक । ओ त पौत वखनथि सोसाग जे ओमा थान पीन नहि केनथि । हम त हिया हाथ उँठा क टिकवि टिकवि क उँगनहा म कहेथ छिएङ्गह जे फुमार रैठी बहि जाए ,,ओहि गाम ले निराह कवी ,गी कोन जलमक पाप अछि हमार कप्पाव प । रूँटि के दाय अचाव मे तेन टारैत मोन त हुनक पप्प सुनि बहन छनी । तखल रैड़की काकी सेहो



आरि गेली “की भेन ए कनिया ,किएक एषा रँताहि भेन छी,” ? अहि आते माते से रँचिदाय के रँड मोन नगेह । जेँ उसावा प गप्प होय त अँगन से फुसीओ कोला काजक बापे ठाढ़ त जाए ,रँड आक्राकारी रँगि पाण सुगारी के तशतरी सेहो न आरँ । खास करि क दादी सरँहक गप्प त थिम्सा पिहाणी स कमणव ,जे रिशेख करि क प्तोते न क होगत छले , , आ वँग रिबँगक भार उँगिया । जे कनिया के ओ रँड नीक ,रँड सुनरि रूमे हुनको सरँहक पोण थोणन जाए ,ट्रिबहण होय एहेन गोष्ठी से ।

रँडकी काकी छेष्टकी काकी के दुख सुनि तमेक पडनिह ‘ये एतरौ से अगुता गोजोहू ,हमव सतनखा रानी सन रँड्रु खसोणी स त नाथ कछु नीक अछि ,ओकवा त भगरती कपो दलेह छुथिह,आ अ कविच्छी । महा सुणा क भगरती के सीवा नीप ,धुप दीप देखा क कहनिह “कनिया ,काहिओ उँगासे छन ,आओ रँड रँव भेजे ,जे देरँ स द दिय थाय जेन ,रँड भुख जाणि गेन कि ननदि स नड ी क जलेत छुकी से पाणि ठारि रँजेत अछि ‘अगोरा थोथ । टुड़ १ हुना क थेनद्रु कहुना कवि क । {हुनका टुड़ १ दहि बहि कचय डजेह}

कनी दिन जेन एजे ह मानती ,ओकवा देखय नही चाहे छे । तबि दिन हड हड खष्ट खष्ट ,कथला कहत हमवा बुआ नहि किन देत छुथि, कतेक रँव अहिना पड १ क लेहव पहुँट जायत अछि ,महिदव त नहि जाय छन कथला रिदागरी कबरी क आनय जेन ,अगल राँप भाय आनि क सासुव से रँसा दैत छे न । एतेक अब ,की कद्रु कनिया युडक मरि धौकड १ जलेत अछि , कथला कान मो न करैत अछि जे रौध रौध से पड १ जाग ,घब बाणि दी ” ।

“काकी ये ,सरँहक प्तोते किएक खवाप होगत छे ? सोसे किए नीक बहेत छे ? रँगसन रँगसन रँचिया अणन मोत क फवमाण जावी कवि देनक । “तो , तु हमवा सरँ के अधनाह करँ से मटौनी रानी ,देखु अणन ,करौछ नगा क जलमेल बही की ? हे दाय ,जहि नग्र तु जेरँए ,अथल स हकल नव कलेत हेत” । “तथल त अ हो नगव कानन हेतेक” । आ पूवा रँजियो नहि सकन की गान प रँड ी जेव क थापड पडने , मरि गेले हे हे” पाछा झडी क तानक,त माँ छनिह घोघ तालन । “हुँह मोल मो न त खुसी ए भेन हेतेन सोस सरँहक निदा सुनि देखरँ जेन मरैत छुथिकलेत रँजेत भागन ओ ओत स ।

“की से फुलेसवी ,आय तोही फुन न क एना हे ,कहिया एनही सासुव स , ,सोस केहण छे ,माल दाल छे की ? ”

नानकाकी मनिनिया स गप्प कवय नगनिह ,आ ओ लोले लोले कलेत ,सोसक देनहा दुखक रँखान कवय नागन ,ओहि दुख स पड १ क त लेहव आरि गेन अछि । “रँज जव थसो ,नान काकी ओकव सोस प रँड्रु खसरँ नागनी । रँट्टी दाय हव उँपहित “ये नानकाकी ,आरँ अहि जुग से लोक रँखव ले रँम खसरँ छे । अहू ओकव सोस प रँम खसरँओ ,एके रँम से सुबलोक छनि जेते । नान काकी हमय नागनी “अ छेडी त जुग से भुव करैत अछि ,एथल की रँमसरँहक दाय ।

कतय कोण गाम से , सनेग रा भागरत छनि बहन छे ,रँडकी काकी के सरँ खरँवि बहेत छननहि । अगल सरँ रँड ी या रिदा होगते छनिह,आ हाथ हाथ भरि घोघ तलोले कनिया रँहुरिया सरँ के सेहो रँग लेल जायथ ।





“ये काकी (हमाकी ओ सरं दादी छनिह, दूदा भिओ पुता सरं हुका सरं के काकि कहैह ) आहाँ सरं त रूढ़ पुवान्छी, पुतोह सरं त आजूकालिक छनिह, मिलमा देखा दियो, मेना घुमा दियो, ग्री की अणना मंग हिनको सरं के रैतकी पाव कवय जेन लल जाय छी ? ’ रूढ़ के गप्पा सुनि छोटकी काकी अणना सरं ये हाथ दूह चमकलैत नहूँ नहूँ रैजनी “ग्री रूढ़िया, रैड़ रैदियन, की कहियहि, काहि कहनिह जे हमरा मंग कनि पौथवि चनेरें, छनि त गोन दूदा भवि रौठ से दिक केनक से रूमू ले, गाउन धन, कोसन, निकार, नरका सुआ किशु ” । रूढ़ के काण ये ग्री गप्पा पडी गेले, ओकरो शोफित थोन गेले, मन ये उठले माथ प उठा क हिनकव मंगल रौसन, हाथ पकड़ि हिनक हम पौथवि न गोनछु आ ग्री हमर सिंदा कनेत छथी । ओकरो खरैवि डने, कता जरौ काण हुका किओ गृध्र ताकु कहि दैक त ओ एकरो रैड़ पौघ अण शेरुन माल छनिह । हुक देह स धवरा उठय नागे छन, आ दूह स नारी हूठय नगे । आ नतीजा, रैजनीहाव के रैड़का रैड़का गावि आ सवाप । जतवा सेहो सुगित कवि दैत छनिह ।

रैस रूढ़ी दास टिकवनी पाछा स “ये छोटकी काकी, ये गृध्र ताकु, गृध्र ताकु ” । आरं की, रिवनी के छता उजड़ि टुकन छन ।, छोटकी काकी ओहि माम रौठ प ठाढ़ भ सम्पूर्ण छैनक स्त्रीगणक सोना रूढ़िया के दादीए के परिवारे नागन छनिह जे एहेन उकड़ी पौती हिनका कोण पाप क कावल भेनहि । आ अण माय के हापे तूव जका धुआँग मोटि क, रूढ़िया ओत स ठक नगा क पड़ियन छन ॥

ए बलापव अण मतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव पठाउ ।



बिन्दुशेखर ठाकुर

बिहनि कथा: छैलामेशी/ दुर्भाग्य/ घुसखोव/ छथाछत

१  
छैलामेशी

- मोदिव हम आग कामपव ले जाएरें, कावण ३ महिनाक तनेरें राकिए अछि ।
- लो छौड़ । तौ रैसी रूने छिनी । अतेक आदमी हमरा रातक जुरारे ले देनक आ तो हमरा मंगे दिनप्री कवरे ?
- ग्री मत्त त दूध छै । किछ लोग अहाँसँ डरैत अछि जे सुगत कहनापव लोकरिसँ हाथ धोरैत पड़ते । दूदा अधिकारक जेन डवरें शीक ले ।



- ठिके छै, कमिक तौ ल जे, तरे देख निहे एकव दूदशा ।
- हम मेलेती आ गमदाले ले, जमानक मेहो पका डी । अण हक लेले रिना हवगिज ले जाय ।
- कालि भोले-भोव कसणसँ रागिग लेठव एले । १ दिनक अणुपहितिमे ३ दिनक पगाव मेहो काठि लेनके । साथे-साथ महणथाक सत समाण गादि क२ न२ गेले दोसव ठाम कसणिएक गाडिसँ । महणथा आँथिसँ लाव ठारैत बहना दूदा कियो हुणकव पकाव ले सुणनके आ ले कियो अरौजे उठेनके ।

२

### दूर्भाग्य

आग भोलेसँ घबमे कमम छै । सर केँ निक निक कण्ड । नगोल छै । चाकदिस एण्डकोके गीत गुणजयमाण भ२ बहन छै महेशबाक घबमे । बलोक कि ए ले, हुणकव छेठकी रँहिक रिवाह जे छुनि । दूदा महेशबाक कण्डके एकठी कोणमे रँसि कलैत देख क२ हुणक सस रँजवनि- "कथा ङ की, एख तँ रँवातियो ले आएन, रूँटी रिदाहो ले भेन आ अहाँ एखलसँ लेप टाव२ नगलौ । " दूदा के रँवमते मोषापावीरानीक मस भवन रँदना ? एत२ सतक पति नगे छै आ ओ सत अणु पतिक साथ प्रसन्न छुनि, दूदा हुणकव पति एहन शुभ अरसवण हुणकसँ अणु कतौ दूव देसिमे कोगना कठैत होतह ।

३

### घूमखोव

-सब नमस्तु

हमरो पासपोर्ट रँवराक अछि । हेते कि ले ?

-हग, रँस ओरुव, एख हम रातु डी, देखे ले छिनी ? तारे जे, रँजेरौ तँ अरिहे ।

-हेते ।

शेनिसासँ पाछु आँथि दू गोठेकेँ पैसा न२ क२ तुवसु पासपोर्ट देत देखि जखन सी.डी.ओ. केँ कहनक तँ ओ रँजव- "ले रँवि, ङ लोक तँ नीक छै आ रँवियाव मेहो । तारो अरिना हाथक हाथ पासपोर्ट चाली तँ चाल पाण थियारौ पडतौ, ले तँ तारिख ठोगत बह सबकारी रकीन जकाँ ।

४

### छुआछुत

-धनमन्त्री रँवा गे, जन्दी-जन्दी पाणि भरे ले, हमरो भव२ के अछि । ओत२ रँरा प्रतीकामे हेते पाणि पिराक लेन ।

-हँ हँ दाग, रँस, भ२ गेले । जे भव ।

रूँटि याक पाणि भरिते कान मोसाहिलक छेठका रँषी आँषि गेले । रूँटि या भवन घेनाक पाणि फेकेत, "रे छेड । तारो आँथिमे मवाडाँव देले ले ? देखे ले छिनी जे हम पाणि भरे डी ? मचकरा कहि क२ पाणियो छुआ देनक हमव । ओरुव जे, तारे रँदमे अरिहे । "

छेड । रँकरा क२ ठाँ रँस रूँटि याक दूँह तकेत बहि गेल ।

ॐ बचनापव अणु मंत्र ggaj endr a@videha.com पव पठाड ।



आशीय अणुचिहार



बिहारी कथा

## बिहारी

बिहारी... बिहारी सभ तँ बिहारी लोगत अछि ।

बिहारी.....

अछि बिहारी कछ जे अहाँके ए.बी.सी अछि.. ?

हँ....

बिहारी उँतम ।

अपन देशके टोहदी अछि ?

हँ.....

बिहारी.. खूँ नीक.

बिहारी-पबबिहारीके नाम मोन अछि ?

हँ...

बिहारी---बिहारी की संकाव अछि ।

अछि बिहारी कछ जे अहाँके की ले अछि ?

जी हमरा रँस नाजू ले अछि ----

ई बलापन अपन मतिर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब पाठ ।



जगन्मोहन प्रसाद यादव

## तीन ठी कथकथा-किये ल/ झुगलें रिसरेंनि

### किये ल

डेठ मामक शीतनहरि सम्येक रोहनि ए उतावि देनक । पना-पना ओस पाना रेंनि दिन-वाति रंहरावी करैए जगसँ मन्थके के कहए जे मामो-जान आ गाढो-रिबिद्ध जिनगीसँ उंग-उंग भऽ काहि कठैसँ मवरें नीक बुनैए । चष्टपष्ट मवरें काहि कठैसँ नीक होगते छै । जहिया मान-जानक कगयाँ तबि दिन लनकन ठाठ बहैए तहिया मन्थोक । झुदा मान-जान जकाँ सौंसे देहक ले । कावणो अछि जे मन्थके कगयाँ मग केशो होग छै, मान-जानके से ले होग छै । गाढ-रिबिद्धक पात अणष बजैछी ले रेंदनि, पीअब भऽ भऽ सुथो नगन आ तुरि-तुरि खसो नगन अछि । आल-आल जकाँ पटामी रेंथक सुगियाकाकीके मल कहए नगननि जे छिआसीअम अगहन तबिसक बहियेँ देखरें । जेहो जावण-काठी आ अल-पानि घबसे छन सेहो सटि गेन, शीतनहरिक कोलो ठेकाष ले अछि, तखन जुरि केशा ? मसमे कोलो राठे ल भेटैनि । राठे केशा भेटैतनि जेँ माष्टिक कमत राठे होग आ दिन-वाति रेंथी होगत बहै, तखन पक्री सडकक सुथ कण्णल हएत किल ? झुदा मरितो दय जोक, जुरिकेक अशि पोड तोडैए जे सुगियाकाकीक पटामी रेंथक पाकन फनक आठी जकाँ सकत ले हेतनि । सकतएले आठीमे ल अफडक शक्ति सेहो अरै छै । सुगियाकाकीक बजबि गेननि र्याम राँगव । ओ जे कठ फाडा-फाडा कहे छथि जे 'नुष्ट नाड, फष्ट खाड, भिनसव भल खेव जाड ।' से सम्येक ठेकाष किअए ल केनथि जे अथनि घबसँ निकलेरैना सम्ये रेंगत तखल ल जोक घबसँ निकलि किछ कवत आ अथन घबसँ निकलेरैना सम्येए ल हेते, तखन केशा दोसव दिन किछ कवए निकनत ? झुदा सष्टे से पोड रूमत । देहक जे सुथ छै से केशा भेटैते ? आकि र्यामराँरा एगव कडमिण मकाष, तबन-पुवन अल-पानिक जिनगी रूमि रेंजे छथि । जेते सुगियाकाकी मसकेँ मवेत तेते ओमवएले जागत बहथि । जुरिकेक राठे कि भेटैतनि जे आलो मल सोगाएले चलि गेननि । असकव सिरी घबसे दोसवागतो तँ बहियेँ अछि जे दुनु गोठेक रूमियो आ हाथो-पएव नड 1-चना कऽ देखितिअ जे जुरि सके छी कि ले । एहल सम्येमे ल दोसवागतिक अकवति होग छै । आल सम्ये हेरें किअए कवते ? असकले जोक चह पीरें नगए, खेसाग था नगए, सुति-पडा बहैए तखन दोसवागतक अकवते कि । दिन-वातिमे एसँ रेंसी चहरें कि कवी । टोरीसो घटी कठैक धाव तँ रेंगले अछि किअए ल कठत । झुदा से ले उमेवो तँ किछ छी । रूठ 1डी मृत्युक कावा छी झुदा अखाणीके केशा से कहरें ? होग छै तेकरो हजारा कावा, झुदा कावण कावा तँ भऽ सके छै । अकावा-कावा केशा भऽ सके छै । हिया कऽ दुनियाँ दिन सुगियाकाकी तकननि तँ रूमि पडननि रेंसोगवकेँ ठेगो एकठी ठाँगक काज करै छै । तँए एकठी सहयोगीक अकवति तँ अछि । झुदा सहयोगी हएत के ? रेंठी मान्मले रेंसै, लेहरो हठले अछि, तखन ? झुदा अकवत तँ अछि अ म्मुका ? से तँ नगोक जोकसँ भऽ सकेए । मसमे प्रम अरिते काकीक मसमे उतव म्गयष्ट भऽ गेननि जे वीतनानक



एँठाम जा अपन रात कहिं जे ओ कि कहए । अलले राँवू जख जेरँह हो, तँ पषवह राँपुत अपनल  
 डी । तगसँ तँ काज ले चनत, काज तँ अछि अपन रँनि अपना जकाँ जिनगी पाव नगरँक ? दूदा  
 तगसँ पहिल रिटावि जेरँ नीक हएत जे जौँ भाव उँठा जेनक तँ रँड रँस, जौँ ले उँठौत तखनि ?  
 तखनि कि, तखनि यएह ले जे वीतनान सन-सन राँरँन गानी गायमे पसवन अछि । सत कि कोनि हएँ  
 आकि बस हएँ भएत । जेकवा हमा अपन रँना अपनलरँ से किअए ले अपनलौत । जौँ सेहो ले  
 अपनलौत तँ पहिल रँमा कए कहरँ पढाति रँमेरँ । उँमेद-नाउँमेदक रँट स्वगियाकाकी वीतनान एँठाम  
 रिदा भेली । ठँसँ जहिला देह सिवसिवागत तहिला देहक हएँन-पुवाण रसए सिमियाएन ।  
 स्वगियाकाकीकेँ देखते वीतनान अँटित भए गेल जे एहला समेमे निकनि काकी दवरँज्जापव एनी ।  
 स्वगियाकाकीकेँ वीतनान साझात् नरँमी सरकप रँमेत । ग्यसँ भवन, जेहल कँठक मरव, तेहल  
 नजबिक ग्य आ तेहल हाथक नुर्छाँ सँ भवन-पुवन स्वगियाकाकी । जाडसँ सिवसिवागत काकीकेँ देखिते  
 वीतनान अपन देह पवहक कम्यान स्वगियाकाकीकेँ ओठरँत अगियासी जेओनक । अगियासीक दूनु कात  
 दूनु गोठेकेँ रँमिते गग-सगप उँखडँक मसुन रँनए नगन । दूदा दूनु अपन-अपन दूँह दरँल ।  
 मसमे अपन-अपन बाग-दोख जे केना पुडरँनि, काकी केमहव एलौँ । दवरँज्जापव एनी तँ टाहक रँव  
 टाह, जमथे रँव जमथे, कनौ रँव कनौ आ सुते रँव ओछागनिक ओकियाण कए देरँनि ।

तहिला स्वगियाकाकीक मसमे उँठेत जे घबरावी पहिल किछु हँ-मिहम रँजत तखन ले उँतवामे अपनला  
 दुखनामा कहरँ । ग्या-ग्या पसवन । दूदा किछु समए ग्या-ग्या भेला पढाति स्वगियाकाकी ग्याग्यारँत  
 ग्याग्या जकाँ रँजनी-

“रँौआ, एक तँ तँ एक रँशिक छह, दोसव अशि तैवामे अछि, जे सुतनो-सुतन काससँ सुलेत वई डी,  
 तँए... ।”

“तँए कहिते स्वगियाकाकीक रँोन रँनरँग पपवमे साए खन रोसनाग जकाँ रँन भए गेलनि । दूदा किछु  
 प्रम तँ उँठए गेल छन, जे तँ एकरँशिक छिअह । तग सग नुर्छाँ-रँधिक अशि सेहो अछि । वीतनान  
 रँजन-

“काकी, तेहल दूवकान भए गेल अछि जे टिडँ-टुनरँनीक कोण राँत जे नमहबको-नमहबकोक जाण  
 रँटरँ कँठन भए गेल अछि । टिन-पहटिन सेहो मेँथेएन जा बहन छै, तखन तँ लोक तारँते धरि ले  
 धीवज वाखत जारँत धरि आँधि तकेँ । ओला तकितो आँधि देहक दुखले अखरँन भए जाग छै दूदा  
 तैयो तँ तुख नगल षँगएँ छुँडी जकाँ लँवागतो चनिते अछि । लँवागत-लँवागत जखन रँदम  
 भए जागए आ षँठक आगिमे जवए नलँधे तखन ले अपनलकेँ हरण चटरँए । मसख तँ सहजे मसख  
 डी ।”

वीतनानक राँतकेँ स्वगियाकाकी किछु रँसीए रँनननि । रँसी रँनिक काका काकीक सोचक धाव । होगते  
 तँ एहिला छै जे एक दूँहक राँत कियो रँसी रँनैए तँ कियो कम । दूदा तग सग तेसरो रँमिनिहाव  
 तँ होगते अछि जे समगम रँनैए । समगम माल जेते प्रमकतक राँत बहन तेतरेँ स्वमिनिहाव  
 रँननक । स्वगियाकाकी तँ सहजे स्वगा रँोन पवथिनिहारि छथि । जहिला कोला वंगक रसएणव दोसव  
 वंग चटरँक रिनि अनग-अनग अछि, अनग-अनग ग जे कियो रँधक दोसव वंग गोर्छाँ रसएकेँ  
 दुमा देनक तँ कियो आसते-आसते वंग गोर्छाँ रँव-रँव दुमा-दुमा वंग चटरँए... । तहिला काकी  
 मोल-मल सोचए नगनी जे रँधक अपन रिटाव वथेसँ पहिल, आसते-आसते मलक उँदाव रँकत



कबर रैमी नीक हएत । रिटाबिते छेनी आकि वीतनाक पगो-करूतवी टाह लल पडूनी । काकीक हाथमे टाहक गिनाम पकडरैत करूतवी राजनि-

“काकी, तेहेन ईकजबोना समए भ२ गेन जे एक ठँ दुनियाँ जाडसँ जड । गेन अछि तैपव आगियो-  
छागकेँ कि ओ तेजी छे जे रेशीख-जेठमे बह छे । ओग समेमे जेउ जाबसँ बोधी-तबकावी रलैए  
तेतेसँ अखल टाह रलैए ।”

करूतवीक बस-बसाएन रौन सुनि कोगनी रौनीमे सुगियाकाकी रामक सबनहवी छिँकरीत  
रँजनी-

“कनियाँ, एहल-एहल समेमे पकथक पकथपणा परिवारमे देखन जाग छे । सब किछ सुवीत बहल  
भावीओ काज हनबूके रूमि पड छे, दूदा सब किछ रिपवीत बहल जेँ अण-अण परिवार, समाज  
आ माहृभूमिक मेरा जे करैए, रएह ल पकथपणा भेल । बूठ भेलो, कोना कि भगराण तँ नहियेँ छी  
जे जे करै से भगए जअत । दूदा एते तँ करै कबरह जे भगराण हमरे मनक नहब जिनगी  
सभकेँ देखु जे हँसत-खेलैत दुनियाँ देखैत चेत ।”

एक रंग अलको प्रम काकी राजि गेली । किछ रीत करूतवी रूमरौ केनक आ किछ नहियेँ ।  
वीतनाको काकीक मोहनी रीत तँ ले रूमनक दूदा करूतवीसँ तँ रैमी रूमरौ केनक । दोसब रीत  
वीतनाक मनकेँ अहो ठेनक जे परिवारक तीतबक जे प्रम अछि ओगमे परिवारक सभकेँ रिटाब  
बथेक समाण अकारि छे दूदा समाजक रीट तँ एक-गतक जकबति होग छे । तगने परिपक  
रिटाबक जकबति होगते छे । करूतवीकेँ गव भेँन, दूहमे ताना-नगा पति दिस आँधि उठौनक ।

करूतवीक बजबि पडा ते वीतना राजनि-

“काकी, अखल देखियो जे एक गिनाम टाह पीलो । एह टाह गवस समेमे मन भवि दैत, दूदा  
अहोसँ कम शक्ति बहि गेन छे, तहिना तँ मखेक शक्तिकेँ होग छे ।”

वीतनाक प्रम सुगियाकाकी ठाठ काल सुनननि । प्रमक एकभगु उँतव ले दैत रँजनी-

“वीतना, तौनी दूनु पवानी अखल अँगास छह । परिवार तँ दूनु गोलक छिअह । जे संताण छह ओहो  
समिनिते छह । तँ परिवारमे ओल रिटाबक धार रहरैक छह जे जिनगीक रंग हँसत-खेलैत-रौतित  
चनए । हँसत-खेल दुनियाँमे कहाँ छे, ओ छे अण काजमे । अण परिवार छी आकि परिवार अण,  
एकवा नीक जकाँ रूमल लोक अण पविछ रूमि पलैए ।”

काकीक रिटाब सुनि वीतना, पगोकेँ कहनक-

“काकी कि केतो पड एन जाग छथि जे गणे सुलेमे बहि जअरै । जाँ, भासक जोगाव कक ।  
खेना-पीना पडाति निचेसँ गण-सगण कबरै ।”

पतिक सह पारि करूतवी रँजनि-



“एहने सभेमे काकीओ कतए जेती। हम सब जूआन-जहान छी से तँ एक मोठी बसु देहमे सँल छी, काकीक तँ सहजे सुखाएन हज्जी छुनि, रैसीए जाड़ होगत हेतनि। पहिले टागँठी गोबहा आनि क२ घुबसे द२ दग छिअनि जे नगने ठगव भ२ जेती। अछ्छा ए कहथु जे कि खागक मस होग छुनि ?”

आशा पारि सुगियाकाकी आस दैत आस मावनि-

“कनिसाँ, भल दूनु रैकती छह, एक तँ भगवान रैसी अज-गज ले देनि, तेयो अपन काजे ओल बहन जे सब दिन अजे-गजेमे रीतन। दूदा जे किछ अपन अछि सब सभेठे निख। पाँट कछी खेत रैल्ले अछ्छक उगजा रैल्ले जाएत आ हमरो दिन घुसकेत कछे जाएत।”

काकीक रात सुनि बीतान राजन-

“काकी, हमवासँ नगो अहाँकेँ रैहूत अज-गज अछि पहिले ओ... ?”

सगँठी क२ काकी रैजनी-

“पहिले पाछु किछ ले, टिडकेँ जतए घोष भले छै ततए बहे छै। जे कियो अपन छुनि ओ एहने दूबकान सभ ले देख बहन छुनि।”

“देख किअए ले बहन छुनि दूदा सरैकक तँ अपन जाण भेब भ२ गेन छुनि, तखन अणकापव नजनि केना जेतनि ?”

बीतानक रात सुनि सुगियाकाकीकेँ कछु नगनि। कछु नगिते मस बर-बरैनि। करैकरागत रैजनी-

“रौआ बीतान, कहनअ तँ रैड-रैडि याँ दूदा, मसख तँ बिरकी होग छै, ओकवा तँ बिरकसँ डेग उठरैए पछु छै। जौ से ले उठौत तँ मसखता केना ओते। खानी दूठी हापे-पएव बहल तँ ले हेते। दूठीकेँ के कहए जे टारियोठी पएव बहल पशु तँ पशु भेन किल। जे हाथी पाँट गोठेकेँ पीठपव नादि छले। दूदा ओकवा तँ अपना बहेक ठौर-ठोकान आ खाग-पीलेक ओबिगान करैक नुर्दा नहियेँ होग छै। ए दीगव रात जे रैल्ले दोसबागते रौन-माड़मे बहि जीरन-जागन क२ नगए दूदा पानतू तँ तखन कहरेए जखन मसखक संग जीरे।”

सुगियाकाकीक रात बीतान नीक जकाँ ले सुनि सौनक। प्रम उषैरैत राजन-

“काकी, जखनि मसख मसख छी तखनि दोसबागतकेँ रौहि पकडि उठारैए आकि दोसबाक रौहिक आशा अपन उठैमे कबए ?”

बीतानक रिटाव सुनि सुगियाकाकी दूसकियागत रैजनी-

“रौआ, कानदमे मसख धवतीपव आनि आगु दूहेँ छलेत अछि। तहीने परिवार-समाजक जकबत होग छै। जखनि रैदूक जन्म होग छै तखनि जौ ओकवा दोसब बछ्छा ले कबते तँ कि ओ उठै ठाठ भ२ सकै। ले भ२ सकै। तहिना रूठ ाड़िमे, जखनि शीबक सब अंग आसते-आसते काज कवरै



जोड़ि दग छै तखला तँ दोसबागतक जकबत होगत छै । जौ एतरो रात लोक ले रूमत तँ कि  
 उ मल्लख कहलैक अघिकार बस्यै । ”

सुगियाकाकीक रात सुनि बीतनाक मसमे उठन जे अलारे काकी मल लोकलें ओमबीमे ओमबरो  
 छिअनि । अगला नीक बहिये होगए । नीक तँ तखनि हएत जखनि कामधेनु मल काकीसँ दुबक अशि  
 बाथरँ । तगले दुबक जोजण आ बहेक ओरिगण करए पड़त । दूदा जग पठवीपव गण-मण उतवि  
 गेन अछि, तगसँ हठ दोसब नीकपव जागमे राधा तँ रीचमे अछि । अगलालें ओमबएन देखि बीतना  
 राजन-

“काकी, अहाँ अगल जिनगी आ अगल रिचावक मानिक अगल छी । जे मल हूअ मे कबरँ ।  
 अखनि एतरो जे जेते दिन अगल रूमि बहए चारँ, तगमे राधा ले हएत । आगु अगल जानी । ”

बीतनाक रिचाव सुनि सुगियाकाकीक मल मानि गेननि जे बहे जोगव म्हाणव पहुँच गेलौ ।

मात भाए-रहिनिक रीच सुगियाकाकी अतिम तेसब रलिन । श्याम रू, चाकर गोन दूह, टोकर  
 देह, ममोन कदक सुगियाकाकी । गाममे रेंडप जणा । ओना समाजक जणाक रीच एककपता रेंसी  
 दूदा तगसँ भिन बहल सुगियाकाकी छेनीह । समाजक रेंडगणि जणा खेती-राड़िसँ जूडन तँ दि-  
 वाति ओग चर्राकेँ चनरें पाडु रेंहन । रेंहाने केना ले बहती ? मल्लख रनि जखनि ए धवतीपव खेन  
 खेलैले एलौ, भिनबबमे घब-द्वाव रेंना जेरँ, दुगहबमे रिननि बौद-रसात जीड । जेरँ आ माँममे  
 मतकेँ उमावि अगल उमवि जाएरँ, यह ल तेन जिनगी । मे तँ सरहक मोमेमे अछि । पतिआणी  
 नगोल राधा अगल रेंठाकेँ राधा रेंना अगल उमवि-रिसवि जाग छथि । अलिना ल दोसब दिनसँ पोता-  
 रेंठा रलैत, राधाक हल्ली नग पहुँच अगल समाधि नगए । दूदा ए रीच जे कृतमित राधा रिचागण  
 करैत बहन ओकरा तँ देखए पड़त किल ?

समाजमे सुगियाकाकी ए दुखले रेंडप छेनी जे जेहल हाथक नुडी रेंदन छेननि तेहल  
 छातीक धड़कक मग कठक मरव, जे दूहक रोन होगत निकले छेननि । गीत-सगीत प्रेमी  
 सुगियाकाकी । भित्ति-छि वृत्तिरानी सुगियाकाकी । अदोबी, दलोबी, रिंवी गत्यादिक मग आमक अँटाव-  
 मोबरँसँ न२ क२ तिन-तिसी धरि अँटाव रेंलौनिहवि । तग मग मतवंग मागक मग मतवंग तबकाबी-  
 त्रिजा-तडू आ रेंलौनिहवि सुगियाकाकी ।

माँ रँथ पुँ सुगियाकाकी रमन्तपुव एनी । जग पविबाबमे एनी ओ पविबाव रँत जतथा-  
 जमिबरेना ले । घवाड़ ी मग पाँट कष्टी चाम । दूदा जेकरा मग रिखाह तेननि, ओ जेहल देखेमे  
 भव तेहल कठक सुवीन । भजन-कीर्तन, नाच-गानसँ मोमनाथकेँ रँटसेँ मिलाह छेननि । जेना  
 पाडुसँ लल अएन होथि तलिना । दमे-बाव रँथसँ जे घब जोड़ि रौड़ ए नगन ओ वंगमटक धीव  
 कनाकार रनि रौड़ गते बहन । पुँतेनी तीन पुँत आगुसँ सुगियाकाकीक लेहक पविबाव गीत-  
 सगीतसँ जूडन । मोमनाथो घुँते-घामेते मानक तीन-तीन-चवि-चवि मास बहरो करैत आ सीखरो  
 करैत ।

किमान पविबाव बहिनो रिनिनाथक -सुगियाकाकीक पिता- पविबाव पुँरि कार्म-खेती-राड़िसँ अगल  
 छेननि । ओना पविबाबमे रीस रीघा चाम आ पाँट रीघा गाडी-कनमक मग नमगव-टोवगव रामो आ





सोखविओ-ओषाव छुनहिनै । कना-मरिउ रिशुलाथक परिवार, सोमलाथक रिशुलाथक अपन परिवारमे कवा लेननि । ले सोमलाथक घर-द्वार देखननि आ ले धन-सम्पतिक हिसारै-कितारै पढननि ।

रसतपुव अरिउते सुगियाकाकी परिवारक सथिति देख मरिउत लेनी । दूदा उपाए की । पतिक कमाग -अर्थ कपमे- किछु ले, मानमे पाहुले-पवक जकाँ आन-जाण । पेटक आगि शोभत करे खातिव मासु-ससुव दिस-वाति एकरेछु केले दूदा कष्ट-मठी तँ बहरे कवनि । नर कनियाँ रैनि सुगियाकाकी घरमे एनी, केना मासु-ससुव कहतनि जे कनियाँ रौनि-रुता कवथ सगे चनु । परिवारक प्रतिस्था तँ प्रतिस्था छिँ तवहि जिनगी तव ले निमते । एको दिस आकि एको मरिउक महत तँ जिनगीमे छुगते । अपन दिस-दुनियाँ देखेत सुगियाकाकी अपना दिस तकननि तँ तवत-पुवत खजला देखननि । पवती देखि जलिया किमानीक जित्तामा जलौत, रैजाव देखि रौपावक जित्तामा जलौत तलिया सुगियाकाकीके लेननि । दूदा, मासु-ससुवक दुपव आगु चढा मूँह केना उठौती, आ तँ प्रम बहरे कवनि । जिनगी जौरौत-जौरौत लोको आ पशु-पक्षी अत्रयसत लेले आनदित जिनगीक सुख-भोग तँ कविते अछि । दूदा जँ रैसिन पानिके खेतक आरु रौनि-रौनि ले बाखर तँ खेतमे पानि केना अछत । जारै खेतमे पानि ले अछत तारै धान केना रोपर । जँ से ले रोपर तँ रौनिहाकि-रौनिहाक पुतोहुक कर्क केना दुखात ? आ जौ से ले दुखात तँ जिनगीके केलेन लेन ? वग-रिबगक प्रम सुगियाकाकीक मल रैवसत पानिक रून्रूना जकाँ ओदरवसुवी वग लेले रैलेत आ फुठेत । मलमे रिटावनि जे सभसँ पहिल अपन ठेकी-जुताक ओवियाण कवी । जखनि ठेकी-जुत भ२ जखत तखन समाजक फरौण-पिसौण क२ अपन सरतव कारोरीव अपन घर-आंगनमे कवर । कि हमरा चूड १-टाँव फुठेक नुर्दा षण । कि हमरा मेदा-टिकस पीसक नुर्दा षण । तखन तँ लेन जे उँक्येव-समाठ, ठेकी-जुतक ओवियाण कवर । केना मासु-ससुवकेँ कहरनि जे अहाँ कर्जा न२ क२ हमरा कीनि दिख । दूदा अपना माए-रौपकेँ तँ कहि सके छी । देह-हाथ मारि जे आंगनमे रैसन बहे छी तगसँ नीक जे अपन घर-आंगनमे किअए ले अपन नुर्दा क कितारै निखरै शुक कवी ।

आंगनक ओसावपव ओछाएन ओछाओषपव रैस सुगियाकाकी अपन दिस-वातिक मख-मखेत मोल-मल सुभावक कवथ नगनी जे केना पौतीमे बाखन खीउ १-करेनाक रीखा सयेपव माष्टमे गाडन जाग छे । मसए पानि जखनि माष्ट पकडि हान परिते फुडफुड १ क२ अँकव माष्टक दुपव आरि अपनाकेँ गाड कहए नले छे । रौनिक कपे अशुआएन सुगियाकाकीक उँतसाह जगननि । किअए ले हुन जकाँ र्ग सिवजि हरक सग राहसडनमे पसवर ? दूदा रीचमे रौधा तँ अछि, ओ अछि जग परिवारमे एको ओ परिवार अपन छी आकि ले । कहले तँ सत कियो छथि दूदा हमरा रिटावकेँ कते महत अछि से तँ थाहना पछाति रून्र । दूदा थाने लेरै तँ कठिन अछि । एककगा मासुकेँ तँ मसुहवि रौजि मसुहवि लेरै दूदा ससुव तँ प्रकथ छथि । प्रकथक कनेज रैनी सराथी होण, अपन रिटावकेँ दँ-चग रैले वखए छहि । मल ठमकननि । ठमेकते सुगियाकाकीक मलमे रिजलोका जकाँ छिँकननि । मल मारि गेननि जे मासुकेँ सगी रैलीन जा सकै । जखन मासु मसुठेती तखन ससुव उँसवता, उँसवत-उँसवत अपना उँसवागा रैनि सोम भ२ जेत ।

दोसव दिस सँनु पव सुगियाकाकी चुलिक ओवियाण कविते लेनी आकि मासु-ससुव अपना खेतसँ खष्टि क२ क२ एनी । पुतोहुकेँ काजमे नागन देखि वरिया पतिकेँ कहनथि-

“रँड काजून कनियाँ घरमे पएव वखननि अछि ।”



पत्नीक रौनकेँ षकावरँ मोहनान उँटित लेँ रूमननि, रूमननि ङा जे सँगे-संग संगी रँनि भवि दिश सँगे काज केरौ तखनि जेहल रिटाव अपन अँडि तेहल ले हूकरो हेतनि लोकक काजो तँ लोकक पहिटाव छी । तद्दमे भवि दिशक थाकन-मावन अपला घबमे अराम लेँ कवरँ, से केहेन हएत ? अयँथाय कौतनमे जहिया अगुआ-पडुआ एक धुनमे जयकाव करैए तहिया मोहनान तान गिनरैत रँजना-

“हम सत तँ हिनका सरँहक -रैँठी-पुतोहू- लोकबी करै छी । उगा उँटितो अँडि । तेहेन भगराण जन्म देननि जे मोमे हाथे-पएवँ देननि । रूदा उगमे रैँगाणी लेँ केननि । उँ टाक सुनेरँ अँडि । जँ टाकमे सँ एकेँठी अरौह बहैत तखन के केकरा पुँडैत । अँही हमवा पुँडितो कि हमरी अँहाँकेँ पुँडितो । तीख डोडाँ दोसब कोला वसता जौरैँक बहैतए ? ”

ममगव-टोडगव पतिक राँत सुनि बरिया भार-रिहून भ२ गेली । निशैँन साहित्यकाव जकाँ जे गदवी-चेखवीक आगिसँ मोषाक ठकाँ जवरँ छुथि, तहिया मासु-ससुवक रौन सुगियाकाकीक काषमे पडननि । अगुकुन मसुन देथि सुनि गयाकाकी दार सम्हावननि । भवन राँदणीन पाणि आँ लोँठी लेल आगुमे पँडूँट गेली । पुतोहूक अँग्रह देथि बरिया जहिया रँवह पाणि-हरा रँनि अँकाममे उँडिँ जाँगए तहिया बरिया उँडिँत रँजनी-

“कनिसाँक सतठी सीख-नीक खणदानी छुथि । ”

बरियाक संग मोहनान आँवो उँडिँ याँ गेली । उँडिँ आँगत रँजना-

“जहिया दरौँ भोज्य-रसुत, चमकेँत थावीमे पबोमनापव अँलवो खेरैँयाक मसु भवकए नष्टो छै तहिया घबक टियँछे-टाव लेँ घबकेँँ घब रँनरैँए । ङाँ घब कि कोला हमरे छी अँकि अँरँ हिनकेँ सरँहक भेननि । जेसाँ सम्हावथि । ”

ससुवक रौन सुनि सुगियाकाकीक मसुमे भेननि, जेहल परिवारमे भगराण जन्म देननि भविसक मासुवो तेहल भेन । मोले-मसु भगराणकेँँ टोड नागिते जगननि जेँ ङाँ दनिदता कते दिश छुँडैँ हाथ पएवक आगुँ ठाँठ बहैत । रूदा मासु-ससुवकेँँ जेँ जिनगी भविक राँत पेँछेमे छुथि सेँ जारैँ सुनि लेँ जेरँ तारैँ रूँडिँ पोडूँ कहती अपन टोखावीक गप-सगुँ । तग सुलेजेँ तँ किछ पुँजी-समए नगरैँ पडत । जहिया रँडका कवखलाँ रँसरेँजेँ रँडका घब रँनरैँए पडूँ छैँ तहिया मसुव गप-सगुँ सुलेजेँ रँसी वैँर्यक जकवत पडूँ छैँ । जग रँनरैँमे किछ रँसीउँ समए नागिँ सकेँ छैँ ।

खेना-गीना पडुँति सुगियाकाकी मानीमे तेन लेल मासु-ससुव नग पँडूँचनी । भवि दिशक थाकनक दरौँगउँ छी तेन । मोहनान बरियाकेँँ कहनथि-

“काँहि धनरोगनी समागत भ२ जाँएत । गाममे कते गिवहैत तँ आँठ दिँ पहिल रोगनी उँसावननि । ङाँ तँ पुँ अँडिँ जेँ अँगना सत केकरो रौनहन जल लेँ छिँ ल तँ अँगला सरँहक काज आँठ दिँ पहिल समागत भ२ गेल बहैतए । ”

आगुकु राँत मोहनानक पेँछेमे बहनि अँकि सुगियाकाकीक हाथमे मानी देखननि । मानी देखिते घबक मानी -मानिक, रैँठी-पव नजरिँ गेलनि । अँगल हूँडल रौँजए नगना-



“भगवान तेहेन रैथी देवनि जेकवा ल अगल खाग-पीरैक ठेकाण छै आ ल परिवारक ठेकाण छै । ओहन मन्त्र रूते घब चनत । अखन अगल दुनु रैकती पेहगव छी, कहूना क२ घीट-तीड परिवारकेँ समावल चले छी ।”

रैथीपव पिताक आक्षेप सुनिते बरियाक मलक मन्थीन राजनि-

“रैथी धन छी आकि कोना रैथी छी जे घब-अगलाक ठाँठक अरुमे ब्रकाएन बहत । भगवान हमरो मरहक ँकदा ओकरे दो जे आबो रौणाएन बहए ।”

सम्बक रात सुनि जहिला सुगियाकाकीक मल रिस-रिसेवनि तहिला मासुक रात सुनि मल तन-तलरौ केवनि । दूदा मासु-सम्बक रीचक रातमे नर कनियाँकेँ पडक चली आकि ले ? मल ओमवा गेवनि । दूदा नीकेँ नीक आ अथनाकेँ अथना जौ ले कहन जाए तँ के पठकाएत तेकव कोना ठीक छै । हँसीओ होग छै लहामो होग छै । गंजीवो हँसर होग छै आ फूलहो हँसर होग छै, दूदा से रूमत के ? हँसी तँ हँसी छिं । दूह थोनि रँतीसी जोवसँ छिं या देनिं, रँडका हँसर भेन । तावतमल करैत सुगियाकाकी मासुक रिचावपव, मासु दिस घुमि, डिरियाक रोशिनीमे मलहूआएन टोकठेन फुल जकाँ ले, थिलेत कनी जकाँ आँधि-भौ-नाकक मंग दूमकिएनी । पुतोहूक मधुव दूमकाष देखि बरियाकेँ, जहिला गोरव खताक पानि धावाक मंग पारि गंगामे पडूट गंगाने रनि जागए तहिला भेवनि । सोमका रैना-रैनी जहिला अगल टेमिठो कनसँ नाचए-गारै नछे तहिला बरिया पतिकेँ देखरैत रँजनी-

“सोमनाथ अगल गुाक हिसारसँ दूनियाँक गुा-भाग जोडए । जोडह, आबो जोडह । हम मठ माए-राँप भेनिं, जीता-जिनगी आ ले काषमे आरै जे माए-राँप रैथी-पुतोहूकेँ राँगि क२ बखल अछि ।”

बरियाक रात सुनि सुगियाकाकीकेँ जहिला अगल शक्ति दूह जगोनकनि तहिला बरियाकेँ सेहो दयाति शक्ति जगोनकनि । मदिबक आगु दुनु हाथ जोडि भक्त जहिला अगल अवाधना करैत तहिला अखन धरि सुगियाकाकी हाथमे मानी बखल अवाधना करैत बहनी । मानी देखि बरिया सुगियाकाकीकेँ कहनिथि-

“कनियाँ, अहाँ रैसु जे सेरो मासुक छी ओ तँ मासुवेमे ले सीखर । हम अगल अहाँ सम्बकेँ देह-हाथ मसारि दग छियनि । ओना सम्बोक सेरो पुतोहूक कर्तव्य छी दूदा मथान-रिसेवक अणुकन । पिताक सेरो आ सम्बक सेरो एक बहितो दु प्रफियामँ चले छै । तहिला जहानदाती माए आ पौमिनिहारी मासु-माएक सेरोमे सेहो भेद होग छै । अहाँक सम्ब मल भगवान केकवा सम्ब देवनिथि । भगवान एहल मठकेँ देखु ।”

परिवारक -तीनु गोठेक- रीच अगल प्रतिवृत्ता पलैत मोहननाक मल मोहनगव होगत-होगत मोहनएन दुबक डारोक मखनक सुगंध निकालि राजन-

“कनियाँ, एठाम तीनिओ गोले छी । अही तीनु गोलेक ले आ घब छी । ए घबक भाव तँ तीनिओ गोलेक ँगव अछि किले । अरु खनदानी घबक रैथी छी । दुनु गोले -मासु-पुतोहू- रिचावि जे कहर से मालेत चनर । मरह ल...।”



मसुवक रिटाव सुनि सुगियाकाकी शुभ प्रतातके प्रशाम केननि ।

दोसव दिन सरैले मसु-मसुव रौनि कवए यवसँ निकननी । तानस करैसँ पहिले टाह-ताह पीना पढाति, सोनह रँथक नर कनियाँ सुगियाकाकी यवक टोकटि नग रैस अगल शैकृतिके खोजए नगनी । हमवा सग परिवारबमे जौ देह धुनि श्रेम ले कएन जाएत तँ परिवारक नीरमे मजगती ले षुत । शैकृतिक ऋतु श्रेम आ तोग दनुमे होग छै । यएह छी अकाम-पतानक दूवी । जतए जे होई, आगसँ दिन-चर्या रँषा चनरै । तौबहवरौमे पाँछै प्रताती गाएरँ आ पहिल-दोसव सँममे पाँछै मगन सेहो गाएरँ, अगला यवमे गाएरँ, अगल मसु-मसुवकेँ सुनरँनि । सत अगल यव देरतारकेँ पुजा करैए, हमजँ कवरँ । तँसँ पहिले अखल टिकुनि माँष्टि योवि सत यव-उसावकेँ टोवरँ शुक क२ नी । सुथेओमे दू-तीन दिन नगरै कवत । कहियाजे आ केकवाजे तित्ती-टिचक नुर्छा बाखरँ । जिनगीक ठेकाण ले अछि । रिष रँष्टेल जे सँगे जयि जाएत तँ अथवम हएत । सत यव-उसावमे वंग-वंगक कप-टिच रँषा जेरँ । कोहरव, तानस, पठक, सुतेक कप रँषा ले बाखरँ तँ नुर्छा यो-रूनि तँ हवागते छै, हवागते जयत । दूदा अ सत तँ तेन यव मजगरेक । मून तँ अछि शैष्ट । जखन अगला खेत ले अछि तखन खेती केना कवरँ । उना लेहवमे जँ खेत छेरै कवनि तैयो तँ खेती अगल नहियेँ करै छुधि । अ तँ निश्चित अछि जे जखन यव-उसावमे टिच रँषारैक नुर्छा अछि तँ काजो-बोजगाव अछि । दूदा जैठाम छी तैठाम कि रेडियो-अखरौव छै जे लोक रूमत । लोक तँ रूमत देखि-पलेख क२, गाम-समाज रँषत रँजाव । शुभ-अरसवक सँग नर-नर यव रँषत, नर-नर टिचसँ यव मजोत जयत । से ले तँ सतसँ पहिले शैष्टक दूह मारैक उगियाण क२ नी, तखन रूमन जेते । ले दूनियाँ पड एन जाग छै आ ले अगल पड एन जाग छी । बहोक अछि आ बहरँ तँ सँगो छले पडत ।

परिवारबमे सुगियाकाकीक मसुवक जिनगीक पहिले जौत यएह तेननि जे सरँहक -परिवारक-रिटावसँ यव चनत । सत गिनि काजो-बाज सिवजण कवरँ आ सत गिनि रँष्टि कवरौ कवरँ । अगल तीनु श्रेमकेँ एकठाम होगते शैकृतिक कप रँषन । यएह शैकृति पुजा रँषि ठाठ तेननि । परिवारक दिन-दशौ सुधवए नगननि । जेना-जेना अर्थक सुतव सुवरीत गेन तेना-तेना श्रेमक कप रँदलेत परिवार चनए नगन । कयो अगल पुजा-श्रेम-अर्थ जौ अगला मसुवकन उगयोग कएन जयत तँ कर्कशतामे कमी अरै छै । कर्कशता ओउ रिषत कप पकडते जतए मसकेँ प्रतिकुन श्रेम कवए पड छै ।

सए रीतेत गेन । मसु-मसुव सुगियाकाकीक सहयोगी रँषि एकधारामे परिवारकेँ ठाठ केननि । उना दस रँथ रीतेत-रीतेत सुगियाकाकीक नठ-जुमि टविकोसामे पसवि गेन छेननि दूदा एते-सयण काजक समाजमे, गाम छोर्छा अतए जेरौक समेए ले भैष्टनि । एक रौनिहाव परिवार समाजक उग माणटिचपव पडूट गेन जे सुतिहाव परिवार कहन जाग छै ।

रीस रँथ गुलेत-गुलेत सुगियाकाकीकेँ पाँछै मनुतान तेननि । तीन रँष्टी दू रँष्टी । मसु-मसुवकेँ बहल सुगियाकाकीक काजमे ओते रँधा ले पडननि जेते अमगकआ परिवारक टिकौवकेँ होग छै । मसुख पेदा कवरँ आ मसुख रँषा ठाठ कवरँ, मिया-पुतक खेन ले छी । ए रातपव सुगियाकाकी सदति कान मियाण बथे छेनी । दूदा मियाण बखलो पढाति दनु रँष्टी मवि गेननि । मात्र तीनु रँष्टी रँचननि । समाजक लोक सुगियाकाकीकेँ जेहल गीत गौनिहावि, तेहल टिचकाव आ तेहल पाक पकोनिहावि एक सरबसँ माले छुनि ।



समय रीतेत गेन । अगियाकाकीक पति-सोमनाथ उरु कइ रँमँजु टलि गेन । उरु दोहवा कइ रँखाहो कइ लेनक । साँसो-ससुव मरि गेननि । तीनु रँठीक रंग अगियाकाकी रसगतप्रवमे रँटि गेली । अपना जलैत अगियाकाकी तीनु रँठीक रँखाह नीके घब जागि केननि ह्दु सयैक रिडि ाये उरिया तीनु जमाएउ आ रँठीउ मद्रामे-कण्ठिकमे रँमि गेननि ।

अथनि पटसो रँथसँ पहिल धरि अगियाकाकी समाजक सद्दु कपी पेटमे हवाएन बहनी, ह्दु सानक शीतनहनि अगियाकाकीकेँ असहनीय रँषा देनकनि ।



## दूखले बिसरनि

काहि भालेसँ केतारैव बूठनी भोजी धीक भैयाकेँ खोज कबए एनी दूदा भेटै ले भेलखि । उना बूठनीओ भोजी अगल मलक लोक, खोज कबए तँ अरौं छेनी दूदा परिवारक कोना सदन्याकेँ सोमेल पुछि दग भेलखि-

“धीक लौआ अंगणमे छथि ? ”

तँ उतब भेटै छेलनि-

“ले । ”

ले सुनिते घुमि क२ छनि जाग छेनी । दोहवा-तेहवा खर्चि याबि क२ एँ दुखले ले पुछै छेलखि जे अगला घबक रात सभ नग रोजरै नीक ले । उना किछ मालमे निको छेलनि । नीक एँ मालमे जे मगड 1-दलक रात जखन लोक रँजए नछैए तँ कते वंगक रात रँजा जाग छै तगसँ समेठक रँवरदी आ दोसब मगड 1 सेहो ठवन बहैए । दूदा सातम रँव एनहा बूठनी भोजीकेँ सुतवननि । धीक भैया गंगा नहा क२ अएले छना कि बूठनी भोजी आरि गेलखि । गाड 1-सराविक समावन धीक भैया तँए आष गप करैक मल ले लोग छेलनि । किएक तँ अगला घबक तीस दिसक समाटाव पछुआएले बहनि । आषठामसँ एना पछाति कियो पहिले अगल परिवारक हान-दान ले बुझए छहैए जे कोष काज अगुआएन, कोष पछुआएन आ कोष ठमकले बहि गेल । दूदा जखन बूठनी भोजी अगल दुखलाम कहए एनखि तखन नहियो सुनरै उँचि ले । अगल परिवारसँ रँसी महत जौं आष परिवारकेँ ले देर तँ सुआवथीएक काज भेल । दूदा अगल काज छोडि जौं दोसबक काज कबए नगर तँ कि दोखी ले हएर ? केना ले दोखी हएर । सभकेँ अगल अधिकारो आ कर्तव्यो छै जौं तेकले छोडि देर तँ कवरै की ? खेब जे होड... ।

एक तँ धीक भैया बन्ताक समावन तैपसँ दोसब समाव दैत बूठनी भोजी कहनकनि-

“गहिले सभ काज छोडि हमर पनटैती क२ दिअ, तखनि आष काज कवरै ? ”

उना गंगा म्हाष केना पछाति धीक भैयामे किछ सँकनसो आ किछ काज करैक नर उँहियो आरि गेलनि आ किछ छोडरौ तथा रँदनरौ केननि । बूठनी भोजीक रात सुनि मलमे उँठनि जे अगल दूब-दवाजसँ अएन छी, नगले पनटैती कबए रँस्र, तदुमे मला थाकले आ गवमाएलो अछि । समेक हिसारसँ नीक केना हएत ? कोना पौखिसँ अछीजन भवरै तखन ले उँचि लोग छै जखन जन अमथिब बहन, जगसँ ले चहन-पहन बहत आ ले गदि-गंधक सँभारना बहत । दूदा बूठनी भोजीकेँ ठावरौ असाष ले ।



एक कानखंड धीक डैगा आ बूँशी डैजा गामक लतागिरी कइ टुकल डना । ओना बूँशी डैजा रिग पेलक लोठे जकाँ डेनी दूदा जाम्बूनी जेन तँ ओहल फुँशन-फाँशन, पटकन-पटकनक ले जकबति होग छै । तगमे बूँशी डैजा मोल्हनी उपयुक्त छैनथि । ओना, सभ रूँसे डना जे बूँशी डैजाक रात आ उँन्ठी गाड़ क टानि, दूनु रँवरँवि दूदा तैयो गाममे ओहूँठी मवदक रँठी छथि जे थला-पुलिसक आगुमे ठाँठ होग छथि । जेहल बकाव-तकाव पुलिसक रौन तेहल तँ बूँशीओ डैजाक लेकाव-तेकाव डहल्लै । गामक लोक जे रूँमनि दूदा सबकारी जाम्बूसँ तँ नीक टबिबक छथि । केना ले छथि, गाम-घबक जाम्बूनी दूखोती चले छै दूदा सबकारीक तँ निखोती चलेथे । मनकाले ले महिसिक घीकेँ गधक घी आ गधक घीकेँ महिसिक घी दूखोतीओ रँषा नगथे । आकि कीनिनिहाव रँलोत ? कीनिनिहावकेँ जे जकबति बहलै ओ मंग करेथे । मनकावकेँ जेते जन्दी घी रिकाएत ओते पहिले ले काजसँ छुँटकावा भेँठत । जखन सभ अपन नातक लोजगाव करेथे तखन मनकालेकेँ किछ कहँ उँटित हएत । निखोतीए जाम्बूसीमे ले कोला कावखानासँ नाथक मान सँकड़ । रँलेथे आ सँकड़ ।-ना ।थ रँलेथे । भनई रीचमे गन्कम-ठैकसक जे कवामात होई । एहेन जाम्बूसी बूँशी डैजा कहियो ले केननि आ ले अथला करे छथि । ओना केतरो महिब बूँशी डैजा किएक ले रूँमन जाथि दूदा सभ घबक जाम्बूसी करेमे थिलेच जाग छथि । जे थुकथ केँठ-कचहरीक गण अपन जनाषाकेँ कहि दग छथि । ओग रूँसेमे बूँशी डैजाकेँ रँसी भाँउठ ले होग डहलि दूदा जग घबक जनाषाकेँ अपन घबक रात कतए राजी, कते राजी, कतए ले राजी गत्यादिक लोष डहलि, ओग घबक भाँज रूँसेमे डैजा हनि जाग छथि । जवधन मल डैजाक बहलै कबनि । कँठ फाँडा दोहरी अँराजमे प्रेम दोहवरैत रँजनी-

“हमवा रातपव काण किअए ले दग छी जे मल-मल थुड़-टाँव हँके छी ।”

जह्लिआ आगक डारिकेँ दोहरी दोम पघिनन, घूनन आ कठगव तीनुकेँ सखरँए नलेथे तह्लिआ धीक डैयाकेँ बूँशी डैजाक रात सुनि भेननि । दूदा मल तँ पहिले गंगा सँकनगकेँ जपेत बहनि जे सान्-पुतोहक सगड क फरिछोठेमे ले पडरँ । आ कि कोला सगड । छी । मोल्हनी बगड । छी । ले तँ रएह रँठी हँसी-खुँसीसँ मएक घब लफ्फा रँनि रँस रँथ रँतरे छथि आ सान्ब अरिते सान्ब दूँन रँषरँए नले छथि । एकवा बगड ले कहँ तँ की कहँ । सोम रात अछि, परिवारक कोला काज करेसँ पहिले सान्ब पुतोहसँ पुछि लेखुं जे कनियाँ आ काज अहाँ लेहबमे केना करे छेलौं । दूगए बगक जराँ भेँठत, या तँ ले कएन अछि रा केनहा ठंग कहि देरँ । कावशो अछि जे एकर मिथिलाचनक रीच फेँव-फेँवक लियामो रँषरँक आ रँजरँक आ गारनियोँ-तिहावक मंग गीतो-नादक कण मगन-अनग अछि । तगले जे सान्ब भागनपवक चनिकेँ अथना आ मरुँनीकेँ नीक कहथि, कते उँटित हएत । गाम-गामक रीच देलो बगक थानि रँषन अछि । जे थान-पीन, ओठरँ-पहिवरँ, रँजरँ-तुकरँसँ न२ क२ गीत-नाद, रिषि-रँरहाव धरिमे पसवन अछि, तैठाग... ।

एक तँ ओह्लिआ धीक डैयाक मल बस्ताक टानिसँ असोथकित बहनि, तैपव बूँशी डैजा आरो नमहव-नमहव टेका काँठि-काँठि नाँदेत बहनि । धीक डैयाक मल गराही दैत कहनकनि जे नीक हएत बूँशीए डैजा किअए ले हमर रँखा रूँमथि । सभकेँ अपन-अपन रँकतिगतो आ समाजिको किछ समस्या होग छै । दूदा से बूँशी डैजा माणथि तखन ले, ओ तँ अपन ताले रँतान छथि । रँतानो किअए ले बहती । मलमे ओह्लिआ छोँठकी पुतोहक रात नटेत बहनि जे ‘आरँ लिषकव भाषम ले कवरँनि । अपन कगए क२ थथुं रा ले थथुं हमरा कोला मतनरँ ले ।’ दूदा से मल मालेजे तैगाले ले होषलि । सान्ब-पुतोह दू पफ्क डेलौं जौं दूनु पफ्क रीच सोमना-सोमनी किछ ठँकर हएत तखन आगुक बस्ता किमहव रँषत । या तँ एक लोठे पठका थनि पडए, या तँ दूनु दिससँ तेहेन देरान ठाँठ भ२ जएत जे बसते लोका जएत । तुफानी धावाकेँ सेहो लोकन जा सकेँ, ओना धाव रँषरँ, पहाड ठाहरँ पिया-



पुत्राक खेन ले जे साधन छै ओ रिस अगलोल पोड़ हएत । केतो राँह रँहक जकबत होग छै तँ केतो छोट-छोट नानी-नहव रँना पानिक रेगकेँ कम करैत लोकन जा सकै छै । तँ नीक हएत जे एक दिन भोजीकेँ चाहो-पाणक आग्रह करियनि आ दोसव दिन पहिबुका पुत्रोहुक चर्ट ठाढ़ केल मसमबरें कबतनि तगसँ तम-तमी कमतनि तखल जान रँचत । मगड़ १-मगड़ १ मस बह्य तखल ल । ओल मगड़ १ जेकरा हजारो ठाम गीबह-गाँठ पड़न छै तैठाम तँ न्यायानय लेन रँनी उँचि तयह ल हएत जे दुनु पक्ष अगलमे दूहमिनी क२ न्यायमूर्तिमँ हस्ताक्षर कबरा लिखए । जेठकी रँठीकेँ धीक भैया कहनखि-

“बूछी, कनी भोजीओकेँ चाह पीआ दुह आ हमरो पियारँह । रँड ीकामसँ चाह पीअक मस होगए ।”

धीक भैयाक जान स्रुतबननि । ओना युमोआ जान नहियेँ बहनि, दूदा तैयो चाह हाथमे नगते ब्रुणी भोजीक दूह धूमकिएननि । दूहक धूमकी देख धीक भैया रँपननि-

“पहिलुका पुत्रोहुक घबदेखी ओहिना मस अछि भोजी । अहाँ रिसवि गेलिध ?”

मस पारि ब्रुणी भोजीक मस तेसव पुत्रोहुकेँ छोट पहिलुकाकेँ मोठ नपकनक । रँजनी-

“अण केलना काज लोक रँह ल रिसवेँ आकि रिसवए छहिये जे अघना बह छै, दूदा नीक केल रिसवि जएत । अहाँ तँ ओग काजमे अण बही, कहु जे कोण धवानी पुत्रोहुकेँ घब अल बही ।”

ब्रुणी भोजीक दोहवी पट रँनिते धीक भैया कहनखि-

“ओना दूहपव केकरो रँड १ग आकि छोटग चहुँकारी लेन दूदा नीक कि अघना रँजनी ले जाए मेहो तँ नीक नहियेँ हएत । केतो अघनाकेँ नीक दरँते तँ केतो नीककेँ अघना दरँते । एहल राँत अखल उँचि गेल अछि । जे समाँ रा हँम घब छोट पवदेशे जा घब रँना लेननि, पेष रँनि गेना । जेँ कोला काज-पीहनीमे भाग नगले लात-हकाव देरँनि तखल जेँ अरँ-जागक गाड़ १-रँस, जहाजक भाड़ १-किवाया ले देरँनि तँ कि हुका मस-मर्जापव ले पड़तनि । दूदा तग सग गेलो प्रम तँ जोड़ने अछि जे जग पेशक खातिव गामसँ हजारो कोस दुव भगजोँ ओग धवती धाव कनिहावकेँ ले गलेखि पारी । खेव जे होड... ।”

दूदाक दैत धीक भैया पुन: रँजनी-

“दूदा ओ राँत हम कहियो ल अहाँक रिसवरँ ।”

रिसवरँ सुनि ब्रुणी भोजी अन्हरोथमे फुनागरँना फुन जकाँ हनसि क२ थिलेत पुड़नखि-

“कोण राँत कहलिध रँनी ?”

“रँह-रँह ! अहाँ रिसवि गेलिध ?”

“एँह, कि कहरँ काजक तेलेन ओमवाँठ होग छै जे कोण राँत लोक मोण बाखत आ कोण राँत ले मस बाखत । काजो करैत-करैत कखला कान मस हवा जाग छै किल ।”





मिगमिमाएन ब्रुष्टणी भौजीक मल देथ धीक भैयाक मल मेहो थीव भेनमि । रँजनी-

“पहिन रँष्टीक घबदेथीमे जे अहाँ सभकेँ रँव-रँवी खुणल बहियनि, तही दिन ल रँष्टीरना सभसँ कहरी लल बहियनि ल एते वंगक रँव-रँवी हम ले खुआ पाएर ।”

जलिना हेँहिठ कनकेन रुबियरौ कान सुखाम पड छै तलिना धीक भैयाक रात सुनि ब्रुष्टणी भौजीकेँ पडए नगनमि रँजनी-

“कोन पवगणाक रँष्टी हमवासँ नुर्छा गब अछि, मात-पवगणाक रँव-रँवी रँनरौक नुर्छा ए देहमे गहना जकाँ सजा क२ बखल छी ।”

रँजैत-रँजैत ब्रुष्टणी भौजी मोक दैत मोकनी-

“अखुणका लोक कहत जे हम रँड नुर्छा गब छी, चनह ते अखला हमवा मेले भागसमे ।”

चूँकी लेत धीक भैया कहनथि-

“यएह रात भूमिक छेँकीओ पुतोहूँ रूमि गेली, तँए भागस कवर छेँकी देनमि ।”

जलिना ब्रुष्टणी भौजीक मलक आगु सभवन बहनि धीक भैयाक रात सुनि तलिना त्रिन भ२ गेनमि । पुनः पहनके पुतोहूँक चट उँठरैत रँजनी-

“ओहो पुतोहूँ कि कोना अरना छथि, दूदा ज दोध तँ छुनहिँ ल जे जग घबमे पेहगब सासु बहती ओग घबक जुगत पुतोहूँक हाथमे लेना जाएत । रँष्टी रँष्टी परिवारमे होग छै । आनक रँष्टी आनक रँष्टीक संग केहेन रँरहाव बाखत, ज रात तँ मागए-राग ल रूमि सकेए आकि कनियाँ-गनियाँ ।”

रँजैत-रँजैत ब्रुष्टणी भौजीक मल चठनमि । धीक भैया कहनथि-

“देखु, ओग पलटैतीमे रँसी दोध अहीक बहए । पुतोहूँ जकाँ कहियो जेठकी पुतोहूँकेँ ले रूमिनि ।”

मल पाडत ब्रुष्टणी भौजी रँजनी-

“देखिओ रँष्टी, जेते दोध अहाँ रँनरौ छी तेते ले छी । कनी-गनी दोध केतो भ२ गेन होग से भ२ सकेए दूदा जेते रूमि छी तेते ले छी ।”

“लेना ले बहनि । देखे डेलौ जे टिचिया-टिचिया पुतोहूँकेँ सरापे छेँनि आ कहे छी जे लेना केनि ।”

“एमे हम की दोध भेलौ ?”

“एमे अहाँ ज दोध भेलौ जे एक तँ ओहूँ रँष्टी लेहक दूह सौतीमे रँन क२ नगए, तैगब जे सासु साँठ-पावा जकाँ ठेकवि-ठेकवि ठेकावा देखि तँ कि ओ पग-दूह कते दिन रँवदास कवत ।



अहीक जे प्रतोहू छथि, किअए ल रैठी जकाँ टूटकाबि क२ ग२ करि जेवौं । जे अर्धगा याव-जाव जकाँ टूटि नग छेनिं । ”

अगन तर्क कमजोव देथि ब्रूणी भोजी डडलैत रँजनी-

“ लौआ, एमे दोसव भाँज बह जे हमरूँ ले रँजवौं । ”

दुमाक जकाँ जेते धीक तैया ब्रूणी भोजीकेँ पकड़ए चाहथि तेते ब्रूणी भोजी, जहिना जोहामे आष-आष द्रव्य मिलौनासँ दुमाकीय शक्ति कमजोव होग छै तहिना आष-आष राँत जोड़ए नगनी । धीक तैयाक मस गराही देनकनि । रँजना-

“ कथी दोसव भाँज बह राँजू । अखल कि भेन, आरौ तँ रूमरँ ल ? ”

धीक तैयाक प्रश्न सुनि ब्रूणी भोजीक मस धकमकेननि । मसक एक पफक करै बहनि जे घबक कोला राँत छिगा क२ किअए बाखरँ । अथनि समाजक एकठा खुष्टी हमरूँ छिं तथनि गवाडकेँ किअए टोवा क२ बाखरँ ! दूदा दोसव पफक करै बहनि जे पमीणा दुरौन काज लोक नग रँजेमे हर्ज ले । पमीणाक धाव आलोक-आष देखैए । दूदा रँज पमीणा दुरौन काजक आमदनी रँजनासँ केहेन हएत ? किन्तु डारिक टूकन राँगव जहिना अगनाकेँ मरने रूमैए तहिना मसमे अरिने हबकि क२ ब्रूणी भोजी रँजनी-

“ अहाँ सत जे पंटेतीमे जाग छिं तँ सगड लकेँ उन्ठा-पुन्ठा क२ ले देखै छिं । अखल उन्ठा-पुन्ठा क२ देखै तखल ल सुगत राँत रँजन हएत । ”

जाग आरेशेमे ब्रूणी भोजी रँजनी उग आरेशेकेँ धीक तैया सुखन पछिया हरा जकाँ रिडि । रूमननि । दस-रौस चिष्टक खेन, भनहिं घब-दुआवक कोल राँत जे मोठगव-मोठगव गाडो किअए ल उखाडि दिअए... । अगनाकेँ समठैत धीक तैया रँजना-

“ आरौ कि भेन, राँजू । अथनि तँ दुगए गोरु छी, कोला राँत नाँपि-तोपि ले बाखु । जौ पनटेतीमे गशारोसँ आएन हएत आ उगगव पटक मियाँ ल गेन हेतनि, तैठाम पट दोखी । दूदा जैठाम काजक कोला गपे ल उठै, तैठाम तँ घबरैए दोखी । डारीपव हाथ बाथि राँजू । ”

धीक तैयाक जिज्ञासा पारि ब्रूणी भोजी सहनि गेली । सहमैक काव भेननि परिवावक अर्थरिन्दू केना दोसव नग राँजरँ । अथनि धरि तँ आरिंए बहन अछि जे अगन मेन्ठेन करैने त्रुखनो पोट रारैवी उन्ठा दूहमे पाष हुनरैत चनिने अछि । जहिना रँज पुनाक विट धीक तैया नगा खोनए चाँह छथि तहिना ब्रूणी भोजी दनि तँ राँजथि दूदा बाहडि, कि खेसावी, से छिपरैमे माहिव । रँजनी-

“ मस अछि किल जे अरूँ बसतेपवसँ सुलैत बरिं । ”

“ ले मस अछि । कनी मस पाडि दिअ । ”

सह पारि ब्रूणी भोजी डडलि रँजनी-



“अही मण-मण बिमबाह पाँट न्यायानयमे अण गराही रँदनि दग छै ।”

छिडा आएन कृष्णी बौज्जीकेँ देख धीक भैया कहनथि-

“सुनु, जे गग कले छी तेकरा पहिल दूजमँ सबाध धरि रिटाव कइ निख तखन दोसब रात चानँ ।  
अच्छा, उग दिसका मण पाँडा दिख जग दिसक नाखाँ ” कहे छी ।”

जान सुतरीत देख कृष्णी बौज्जी धूमिखागत रँजनी-

“सुनल बहिँ ल जेठकी पुतोहूँ रँजनी बहए । अ केहेन भेन जे एक शीशी जोहामर भाए दइ गेलै  
तेकर उगवाग दिखए, से एहेन होग । कहे कि ले जे लेहबमँ दराग-दाक ले अरितए तँ कहिया ल  
मरि गेल बहिति ।”

“ले मण पाँडे । कनी सविखा कइ मण पाँडा दिख ।”

जहिया थिसकबकेँ सुनिहाव भेटैते मण थुशी भइ जाग छै तहिया पुतोहूँक शिताबी उठा  
कृष्णी बौज्जी रँजनी-

“अहीकेँ पुठै छी जे एकठा जोहामरक शीशीकेँ केते दाम हेते । रँडे हेते तँ एक मण कपेखा ।  
एक दिसक एक गोलक खेलाग केते होग छै । से जोडा निख । तखन गिना कइ देखिओ जे तीस  
दिसक खर्चा जोडनक तेकर कोला मोजले ल आ एक शीशी जोहामर जोडा गिहावक दोन पाँडे, से  
अहीकेँ रँवदाम हएत ?”

धीक भैया-

“रँवदाम हूँअ आकि ले हूँअ, दूदा जे परिवार तीस दिसक खर्च जोडाए तग परिवारमे एक शीशी  
दरागए किअए राहबमँ उत । दूदा लेहबक देन रसतुकेँ रँसी आ मासुबकेँ कम करँ केहेन हएत ।  
होग किअए अछि, होगए अँ दुखारे जे लेहबक सम्पतिक नाउपव परिवारमे टेरि पणपेए । तँए  
किअए ल सम्पत्तित परिवारक रीट राहबक सभ रसत, महरक अथिक मोमला आरि जाड । जखन  
परिवार सरहक छिँ तँ परिवारक रसतुओ ल सरहक भेन ?”

रौहियागत धीक भैयाकेँ देख रीटेमे कृष्णी बौज्जी ठेकनकनि-

“एना ले हएत । जखन अछिँ सुनए टहि छी आ हमाँ कहे जेन एना तथनि शुकटेमँ सुनिए गिओ ।”

कहि कृष्णी बौज्जी टोकीपव पन्था जमा रँसनी ।

बौज्जीक निश्चिन्ता देख धीक भैया बुनि गेना जे प्पेठमकक घबमे दुपहबिया सिदहा बहल भिसुबका  
उगछा नामे निश्चिन्ता आरि जाग छै । तहिया तबिसक भेननि अछि । दूदा हमाँ तँ आरि अणारकेँ  
पहिलका जकाँ बहियेँ बुने छी । सरहक मगड । हमार छी से बुने छेलौ, दूदा गंगा डुम देना पछाति  
एते तँ भेन जे सभ मगड । बुनर अण छी । मगड । तँ मगड आक छिँ । जखन बौज्जी आशी  
नगा कहे एनी तँ पणटेती कवए ले जखर, दूदा टलेक वास्तामे जतए जे पीवह-गोठी छै तेकरा



ताकि ले रैवाएँ मेहो तँ नीक बहियेँ भेल । जहना माघक मितएन कतारकेँ छाँडबक ठेवीपब रैसन देख उँकड़ी छाँडबरेना, जोठेँ भवि पाणि डुंगव डमेन दग छे तहिना धीक डैया डोजीपब डमरौत रैठीकेँ कहनथि-

“बूछी, रँदू दिन भ२ गेन बूछी डोजीक संग रैस खेना, तँए पहिल जनथे नारै । पछाति कसोँ थुँखरिहथ ।”

धीक डैयाक आग्रह सुनिते बूछी डोजीकेँ पछिना एकठाँ घँषना मल पडनथि । घँषना मल पडि ते कणरात रिसवि बूछी डोजीकेँ धीक डैयाक राँत अणसुन हूँथ नगनथि । जेकब हन भेलथि जे रिटावसे जरँवदाम धका नगनथि । जे पाछु रँसनथि । मल पडनथि ओ घँषना जगमे बूछी डोजी पार्टीक पंच रँनि पनटैतीमे गेली । जेठाम रँमि ले पेली जे ३ जगह केहल छे । गाम-गामक टानि-ठानि भिन्न-भिन्न छे । जगमँ गाम-गामक जगहो टैठैह भ२ गेन छे । कोला गामक रैसी लोकक हाथमे कितारँ बहे छे तँ कोला गामक रैसी लोकक हाथमे टूँपुँटियाँ नमहबका हथियाव बहे छे । कोला गामक रैसी लोकक हाथमे खेनक सामग्री बहे छे तँ कोला गाममे हँसुआ-खुवणी-कोदावि, कोला गामक रैसी लोकक हाथमे बिट-हथोवी, पौचकमे बहे छे तँ कोला गाममे एजेसीक हार्म-जिनद ।

गणक हनहनीमे बूछी डोजीकेँ शेरँतमे रीथ मिला देल बहनि । संयोग नीक बहनथि जे लोकक रीच बहथि, उँठा-पुँठा क२ डकूँव नग जा जाण रँटोकनथि । तनी दिन बूछी डोजी काण ध२ जेनथि जे जगह देख किछ कबक टाली । दूदा बूछी डोजीक त्रक तथनि थुँजनथि जथनि धीक डैया दोहवा क२ आग्रह केनकनि-

“पहिल किछु खागए जेरँ तथन गण-सण हेते ।”

‘खेनाग’ सुनि बूछी डोजी चमेक रँजनी-

“खाग-पीरैक अकमठाँ छोडू । गणमे कनी तेजरी आनि निथ । अथनि खाग रैवो ले भेल अछि । अहूँ काज-डँदामे कनी-मणी अरँव-सरँव तगए जाग छे ।”

अणन जान सुतबन देखि धीक डैयाक मल अमथिब भेलथि जे जहना गोशु नाक रिनाग दुध देखि डाली तहिना खेनागक नाँगव बूछी डोजीकेँ डगा सकै छी । मल थीब होगते धीक डैया कहनथि-

“अही तेजरीोक राँत कहे छी आ अणठेरौ कले छी ?”

“ले-ले, अणठेरौ कहाँ छी । एकठाँ ओमडि बहए तथनि ले, तदुमे तेहेण-तेहेण भता मभ पेल अछि जे केकब दूँह केमहव छे आ केकब नाँव केमहव छे जे रँतिया जकाँ निहारी-निहारी ले देख पडैए । ३ तँ ले जे घेवा-मूलीक रीथा जकाँ रोपैकान केकरो दूँडि अकाम दिन आ केकरो पतान दिसकेँ द२ दिथी आ जनमे कान जे पछुआँ ओकवा तोरैसँ गबिथारी ।”

जहना कथाक लोकनिकेँ मानक किछु मास रियेए खेजेमे बाजगीव चलि जाग छहनि तहिना बूछी डोजीक कथा हवागत देख धीक डैयाक हजाव नमँव रिजनी रौन जकाँ त्रक द२ मलमे उँठनथि,



जहिला शिकाबी जानक एकठा सुत पकड़ा सौंसे जान थोला नगए, तहिला तँ गप्पे-गपमे नगड़ क बगड़ पकड़ा थोला न जा सकै छै । रँजना-

“जएह सोमहामे पड़ तेकरे अन्हू जकाँ किम्हरोसँ झुँटीएल आँउ । अपल ल देखरै जे अगिला जनममे कोन साँप हएत ।”

धीक डेयाक सह पारि बूँशी बोजी समरि-समरि दिस छुड़पेत रँजनी-

“कहू तँ एहेन रात अहीकेँ रँवदास हएत ?”

रिषु झुँडीक रात सुनि धीक डेया अकटकेना । कानीए ल अन्हरिया वाति छी । जिनकब जिह्वा नपकि-नपकि दृष्ट नशि करै छन्हि । झुँकी दैत बोजीकेँ झुँकियारैत कहथि-

“एना साँपि-तोपि रँजल काज ले चमत । उघाबि-उघाबि रोजू ।”

सह पारि सहठेत बूँशी बोजी आँथि-काण, झूँह-बाक आ दहिला हाथक पाँदे उगवी छिड़ा यरैत रँजनी-

“घबक रात छी आनठाम रँजेमे नाज होए झुँदा अहाँ तँ जिनगी भरिक संगी छी, रावह-रँजे दिस आकि रावह रँजे वाति संगे लोकक रीच बहजौ, दूनु गोलक तीत-गीठ दूनु गोल जल छी । तँ कहे छी । कहू जे ३ केहेन रात सदिथन जेठकी कहे छेनए जे हमरा माएक पएव पोला जकाँ लिकब छीछा-रीछा ले छन्हि ।”

बूँशी बोजीक रात सुनि धीक डेया पछुनथि-

“एमे अहाँक कोन नखबाज-रँहातब चलि गेल । जे रात पुतोहुकेँ माए-बापक मिथोन मल ले बहननि । जौ मल बहिति तँ रिटाबि क२ ल रँजितथि जे जखन दूनु समरीक रीच हम रँषी-पुतोहु दूनु भेलौ, तखन हमरा जिधँ दूनु ल एक बग । एक जिनगीक पूर्ण पक्ष आ दोसर उतब पक्ष । तगने एते अही किअए आमीन पील छी ?”

गीठगव रात बहिति बूँशी बोजीकेँ अमातागल नगननि । मल गरही दगले डेयाव भेननि जे कोला रौस बसगुसँ खँषी होए झुँदा जे बसगुसँ खँषी नहियो होए ओहो राँगस-तेरौगस भेल तँ खँषी होए जाए । जौ मे ले होए तँ दहीक सुखाद खँषी तँ ले छिधँ झुँदा टीनीक काज किअए पड़ छै । पोवासुठ जकाँ मजगुती बूँशी बोजीक झूँकेँ धकेन थोलाकनि-

“अच्छा अही कहू तँ एके रिद्यार्थी कोलेजमे ग्राहफेसबसँ पढ़ए, हाग सकुनमे उँट्ट शिक्षकसँ तगसँ कम मिडन सकुन आ सभसँ पहिल अगला परिवारक भाए-बापक संग अगुआएन भाए-रहिसँ सेहो पढ़ए, तगमे के कम श्रेयठ के श्रेयठ आ के रँनी श्रेयठ भेल, से पहिल बुँमा दिअ ।”

बूँशी बोजीक प्रथम सुनि धीक डेया ठेट बसतागव जहिला सांगिकक झूँह घुँमोन जाग छै तहिला बोजीक झूँह घुँमाएरँ बुँमननि । तेहेन लतागिबीरना सरौन पठकए छै छथि जे अलारे दिक-दिस मासक-मास खागरेना अछि । झुँदा आँथि-झूँहक चटती देख अपुणकेँ चटरैत रँजना-



“ देखू, अखनि धरि ले कहल छेलौं दूदा जखन गग-गव-गग उठैए तखनि कहिए दग डी । ”

हवएन रौस भेटैक संभारना देख जहिला जितनामा जलौत तहिला जितनाम बूठनी भोजी  
रँजनी-

“ मसक रात जे टोवा क२ बखे ओ टोले भेन । अखनि धरि अरुँ मसक भेलौं । ”

बूठनी भोजीक तीसकमियाँ रँगी धीक भैयाकेँ नगननि जकब दूदा जीहमे ले कातक गनखबमे मिष्टी  
माबल बहनि । जे कनीमनी धाँउ भेल तँ डुँडियो जाग छै । दूदा अमाती कष्ट निकालेले रँगुव आकि  
रौसक काँष्टक जकबति पडा ते अछि । पछनखि-

“ कते दिन अहाँक जेठकी पतौह कहनि जे मास-मास जकाँ हूअ तखन ले, बूढी या तेहेन बपकाहि  
छुथि जे भेन भासगव दूहि गबमे बहे छुथि, केमहरोसँ एकठा करेना, तँ केमहरोसँ एकठा नूमनी  
लल ओती आ हाँग-हाँग कि दु-तीनठा धूकडी तडा जेती । तडा छुथि तगले दूख ले हाँगए दूदा  
तेहेन अगसोगावखी छुथि जे अगुमे रौसन दूह तकेत बहर, दूदा एक धूकडी देती ले । ”

कोठीक दूहसँ जहिला धाँ-टाँव ततुआ खसए तहिला बूठनी भोजी ततुएनी-

“ लौआ, पेटक रात रँजे डी । हमवा एक खठ गच्छा ले हूअ जे जेठकी माँनी बहे । तीनिठा रँगे  
अछि तीनिठा पतौह हएत । अही कछु जे तीस-तीस गोठे जग घबक भनसिये भ२ जाएत तग  
घबमे भासक जोगाव के कवत । कनियेँ उच्छुब देल तीस भेन, अगन परिवारक भाव  
उठौनक । ”

“ समझित परिवारक माले ग्रा ले ले जे किछु गोठे कमेलेँ रँकी सभ रँस खेलेँ । समझित  
परिवारक माले समझित जिगगी हाँग छै । तँए... । ”

धीक भैयाक रात सुनि बूठनी भोजी रँजनी-

“ अखनि जाए दिख । ”

“ अखनि जाए दिख ” रँजिते बूठनी भोजीकेँ धूक द२ मस पछननि जेठकी पतौह । ओकरे कावनाम  
कहेले धीक भैया अँगम अएन डी ।

तखन धीक भैया चडा यरैत पछनकनि-

“ देखू, रँव-रँव एकर घबक पनटैती केल घब हेहक भ२ जाग छै । तँए जेते नगड । अछि से  
सतठी आगए सुनि जेर । रँजू, दोसब पतौह किअए गवदेशे चलि जेन ? ”

गहिवका पतौहक खबला ओवागते बूठनी भोजी खडलीसँ निकलि गवतीगव डाँड-रँसकी करैत  
नट्टी या जकाँ रँजनी-



“ देखियौ रौंखा, ममिनी मोहबदे मल गेल । कहियो सगड़ 1-साँठी ले भेल । उना सगड़ 1-साँठी कबए चाहितौँ तँ दूनु सँम होगतए ऋदा अगल पबहेज करैत बहलौँ । ”

‘ अगल पबहेज’ सुनि धीक भैया दोहरौनकनि-

“ कि पबहेज केलौँ ? ”

“ कि पुँठे छी जेते ककतेन सात दिनमे खर्चा होग छेनए तेते एकर दिनमे करै छेली । ऋदा घबक रात सुँमि केकवा कहितिअ । लोक कहैत जे पुँतोहूँ खँगु जे ल दग छे । ”

“ अछ्छा छोड़, तबि दिन अहाँ पुँतोहूँ नीक-निश्कत खुँखरिते बहलौँ । पबदेशे किअए जअ देनिअ । रौँठी कमागल गेल आकि घब-दुखीव रँजलैले ? ”

धीक भैयाक प्रेम ब्रुँषी भोजीक मलकेँ हौँव देनकनि । जहिया डौँडीमे दूनु, मकुखन आ पानि बेनीक रँजलै सँगे नटेत तहिया ब्रुँषी भोजीक मल नचननि । रँजनी-

“ रौँखा, उकव राँशो शिले-रँजावमे परिवार बाधि रौँठीकेँ पड़रौँ केनक आ ट्रेनिअे कवा देनके । उतए उ दूनु पवानी लोकरी कवत, कमाएत । अँठाम कोन काज करैत, तँए रिटारनैँ जअ देनिअ । ”

“ जहिया दूनु जेठकी-छोठकी रौँठी-पुँतोहूँ घब छोड़ि चलि गेल तहिया जौँ तेसरो चलि जअ तखन कि कवरै ? ”

धीक भैयाक प्रेम ब्रुँषी भोजीकेँ मरोड़ि देनकनि । टाक दिन नजबि दोगए नगननि । ऋदा, जरारक कोना रँठ ले देख पानि पनठैत रँजनी-

“ देखियौ रौँखा, गण्डा हुँअए आकि गानी, दर्जन हुँअए आकि मोले, असन रौँठी तँ दूगएँ ल होग छे । उवो -रौँचनका- सँग तँ कठी-कठी भगए गेल छे । ”

‘ कठी-कठी’ सुनि धीक भैया प्रेम उँठौननि-

“ कि कठी-कठी भेल छे ? ”

धीक भैयाक प्रेम सुनिते ब्रुँषी भोजी मटियागव रँजन मटिरौँह जकाँ मट्याटरौँत रँजनी-

“ जेना कोन रिनेँतसँ आरि कहै छे जे गामक किछ ल सुँमन अछि तहिया अणठा कइ रँजल ले हएत । ”

ब्रुँषी भोजीकेँ धकियरैत देख धीक भैया रामा ठेहूँकेँ अबकरैत मगाड़ि रँजनी-

“ अछ्छा राजू, कि कठी-कठी भेल छे ? ”

धीक भैयाक आग्रह सुनि ब्रुँषी भोजी अग्रखा जकाँ अगवागत रँजनी-



“अहाँकेँ लेँ बुनमन अछि जे जेकवा चाबि या पाँछी रैथी बहे छै, उगमे रीचना बिगु किछु केलौं पाक-माफ बहेए, दूदा से जेठका छेठकाकेँ समाज बैनए देत ?”

बृथनी भोजीक प्रथम सुनि धीक तैया रौनकेँ आगु रैठरौत गोनकीमे सविखा क२ फेकननि-

“अहाँ मल रीचना जेते रैथी भेन उ रैथी भेल ल कएन ?”

दूनु हाथसँ गौनी-रौनकेँ पकडि जलिया गोन होगसँ रौंटा नगए तलिया बृथनी भोजी रैजनी-

“रैथी भेरौ कएन बहियौं भेन । रीति-लेराजकेँ मानरौं तँ लेँ भेन, अपन रैठरौत बुनरौं तँ जलिया एकठामँ छेठ अछि तँ दोसवसँ नमहरो तँ अछिए किल ।”

बृथनी भोजीक रात सुनि दोसव दिस दूडत धीक तैया रैजना-

“एहला रैथी -रीचना- तँ होगते छै जे जेठका-छेठकाक सीमा तोडि माए-रापक मेरा करैत अपनारकेँ जेठका, ममिना, समिना, छेठकाक पतिगानीक रीट ठाढ़ भ२ जागए ।”

धीक तैयाक प्रथम उँतव लेँ पारि बृथनी भोजी करोठिया मावननि-

“देखियो, जेठका-छेठका लेँ कोला रात भेन । जौं से होगत तँ हजारक-हजार रैठरौत सगवकेँ कियो काज लेँ देनकनि । खागउ रौं भेन जागए दूदा रात पडुअएले बहि गेन अछि ।”

“अहाँ तँ अपन खगडि क मकग जकाँ रुदि-रुदि डिडि येरौ करै छी आ तीनी जकाँ टनटनरौ करै छी । राजरौ कि फेब रौंएरौ कवरौ ।”

ठिकासगव रैसन घबडाड । जकाँ मठौठक खट-रौती अजमरौत अजमोनिहाव जकाँ बृथनी भोजी रैजनी-

“अही कइ जे अ केहेन भेन जे ठैसगवि जकाँ राजनि बहए ।”

ठैसगवि सुनि धीक तैया ठैसगवि-

“खानी ठैसकेँ ककली चलोल रौरवी लेँ होग छै । सविखा क२ रौजू जे मगड एक जडि कि अछि ?”

“मगड एक जडि कि बहत ? अहाँ लेँ देखे छिअ जे घबसँ रौनजोवी घिट-घिट स्रुगणक संग कि होग छै, तैठाम कहे जे कमा न२ क२ बिखाह-दूडनमे हगठे ग्राहनी कवरौ । तेकवा हम लोकरौ लेँ । बृथा-नमपठक रैबिखाती भ२ गेन अछि आकि नीक लोकक अछि । ताडी-दाक पीरौ छेड । सत षाट करैए तैठाम गज्जत-आरक लोक अपन लेँ रौटाएत तँ आन गोल लेते कि रौटौते ।”

बृथनी भोजीक रात सुनि धीक तैया ठामकना । अपनारकेँ निकतव पारि पडननि-

“रीचमे तँ रैठे अछि तेकवा पहिल कि कहनिअ ?”





रैठोक बाँउ सुनिते ब्रूषणी बौजरी टोकीगव मँ कुदि नीटा आरि रँजनी-

“ ओ तँ हिजवा डी हिजवा । ल मोगीए ल पुरकथे । रँनिगोरिना । ओकरे मरुमँ तँ पुरतोहूँ दुबि भेन अडि । ओग निरनज्जकारे कथी कहरौ ? ”

“ तखन मँह किअए तकेत वै डी, दुनु हाथे मोठी पकड़रै से ले ? ”

“ मल अगला होगए मूदा हएव मोटे डी कही हाथा-राँही भेन तँ ए रूँठ ाड़िमे मारि खाएर, ले जे मोठी-मोठीअरि भेन तँ ओकर तड़गव केमे छे गोठे-आथे उँखडते मूदा अगल तँ पकनाहा गोठे-गोठे क२ रीँडा जखत, तेकरो डव होगए किल ? एकरैवक जौँ पकनाहा केमे बँहते तँ ओते दुख नहियेँ होगतए मूदा मगवथागएँ जे गोठे-पगुवा पुरक भेन ओ आरि मोनहणी भेन । ”

“ डव सुनि धीक डैया रँजनी-

“ रैठो-पुरतोहूँ दुनुकेँ कहि दिओ, तुकगव खागले दिअए । एँमँ रैसी आरि कथीक जकवति अडि । गणदिवा अरामक घव भगए गेन, तेहेन-तेहेन मरुँठेव, कमलान, माड ी पुरतोहूँ पठा दगए आ रँड 1-रिदाग तेते होगए जे नता-कगड 1क जकवते ल अडि । तखन कि टाही ? ओना करैए रा ले करैए ग ओकर धर्म काज भेले । जौँ नहियेँ कवत तँ अहाँकेँ जोडि भगती से काज टनतनि । ”

धीक डैयाक राँत सुनि ब्रूषणी बौजरीकेँ किड हवाएन रौम जेना भेठेननि । पुरुनखिण-

“ ले रूमजौँ जे कि कहनिअ, ले रँनतनि । ”

गदगदागत ब्रूषणी बौजरीक टैहवा देख धीक डैया कहनखिण-

“ जीता जीवणी अहिला होग छे हेरै कवते । कहुना अहाँ माए भेनिअ । जीरैमँ मरे धविक भाव ओकरा छे । से जारै ले पुरीत तारै पवतराएक भागी बहत । तँए अहाँ मूगजोगव रिसैरनि । ”

मूगजिक अमवा देख ब्रूषणी बौजरीकेँ अगल ओडागनिक जिणगी मगमे उँठननि । दरौगओ-दाक तँ करैए पडते... ।

धीक डैया ब्रूषणी बौजरीक मगड 1 समागल केलाँ ल बहनि आकि ब्रूषणी बौजरीक जोठका रैठो-मोमला आरि कआरि माड 1त रौजनी-

“ काका, एँ रूँठि यारै पुरुडियेँ जे एहेन गपुपकवि किअए अडि जे अगला डुपे षठीगत हएत आ हमरो सभकेँ षठीरैए । ”

मोमलाकेँ मगहारेत धीक डैया रँजनी-

“ पुरवा गप-मगुप मल पडि गेन जेले तँए देवी भ२ गेन । ”

आँथिक गणीवा ब्रूषणी बौजरीकेँ दैत मोमलाकेँ कहनखिण-



“माएकेँ अत्ता-ताता खुअरै छहक किले ?”

सोमना- “की खुअरै, रूठि या अपल हथकड्डु अछि।”

अ गु-आगु बूठनी बौजी आ पाडु-पाडु सोमना घबहलौं भेल। ह्दा अमती कष्टमे बूठनी बौजीक मन ओमवागते बहनि, होन्हि जे अखल ह्दकेँ काण-तोषि दिई ह्दा ह्दमे मोचथि, एक तँ अरैबक सपन छी जेतेकवा भुठ्यागए जेरै तँ अम्का दिले ओल्ला वीर-वीरैमे छलि जाएत। तँए छुपे बहरै नीक।

तल्ला सोमनाक मनमे अपन तँ कन्ना-सन्ना ह्दा घबराणीक रात कहले आन जोरै नग किअए गेल, से तामस बहे। होग जे लोक जेते नीक कहितए तँ अखल छवि थापवमे ह्द ह्द घुसा घब दिस कइ दैतिई। ह्दा एक तँ ओल्ला समाजमे अरौन छी तैपव जँ एहेन काज कवरै तँ आरौ दौखी हएरै। तँए छुपे बहरै नीक।

ई बचनोपव अपन मतब [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाउ।



३१. जगदीश चन्द्र चौधरी 'अमिन' -गजन १-४



३२. रिशीता मा-रवदण/तय्योकु दिसम पब २.



रमा-अहाँक गाम कतइ अछि ? / पाहल अप्पन प्राण भेल !



शिकारिका



३३. अमिन मलिक-गजन



३४९. श्रीव कुरुन्द पाठक- गजन २.



सुवेन्द शील - कुरुदा कवरौ की ? / रैछेली/ बरका  
महेशेराणी/ टूहाड



जगदीशे चन्द्र ठाकुर 'अमित'

४ थी गजन

टाकिष्ठा गजन

1

थिडकी, केरौव किड लै, महन कोणा भेलै  
ल वदीय आ ल काहिया, गजन कोणा भेलै ।

एसगर डनीह ओ आ डन दैल पाट थी  
लै जामि तमसगीवके बहन कोणा भेलै ।

ठीक छै बृह्मश्रीमे, हम आएरँ मासे-मासे  
अ रात अगन राग के कहन कोणा भेलै ।

ओ खाज डलि नून, मूव कि गुड सगे रोष्ठी  
कद्रु तँ तीस मान धरि सहन कोणा भेलै ।



जन, धन, अतिरिक्त सब भेन अगरीव  
मासियाक सभठा एना दखन कोना भेलै ।

सबन रार्थिक रँहव, र्थ-16

2.

सुकज तरेगन टाक दुनिया  
नीक हमर भगवानक दुनिया ।

सोछु त आग कलैए की-की  
असादीक सन्तानक दुनिया ।

रीया थीक महाभावतके  
निर्भया क अगमानक दुनिया ।

जीवनके डूमेर रँगरैत छी  
नर-नर अहमसानक दुनिया ।

देखु दानमे डूरन अछि  
जग-तप-योग-धियाणक दुनिया ।

बहए निवोग, निरक्षर आ पारन  
अम्ना केव अतिमानक दुनिया ।

मात्रा 16 प्रहक पातीमे



3

जुनि गुडु की कले डी हम

निर स्रगम नडे डी हम ।

काहि डलेत डुलो अराम

आग स्रगम डले डी हम ।

हम मर के मुठ बुने डी

मुठ के मर बुने डी हम ।

अराम जले डी, हम मुठे डी

अराम मुठे डी, जले डी हम ।

लोक कलेए, हम हमे डी

लोक हमेए, कले डी हम ।

लोक रजेए, चूपा बहे डी

एसग नेमे रजे डी हम ।

मोष होगुडु त कानी-थीनी

मोष नेन त नटे डी हम ।

कन्यादान नलेए कृत्तिकर



बेद-प्रवाण जलै छी हम ।

शेवू, मित्र, देरी आ देरता

संभ स्वयंमे तके छी हम ।

सबन रार्णिक रँहव, र्णी-10

4.

किडु गारि जिय, किडु गरौ जिय

ज्जीरण थिक हगुआ, मना जिय ।

अ सडक रँशन छै चनरौ जे

मोष्टेव एहि ठाम सं हष्टी जिय ।

अडि मोन हमर त मिथिलेमे

तनस कतरौ अहां खष्टी जिय ।

हम तमसायर मैथिलीएमे

अंगरेजी अ कतरौ बष्टी जिय ।

हमरो सहोदरे रूमू यौ भाग

हमवहू कलेजस सष्टी जिय ।

नहि टिहय अगला लोक आरि

हे प्रलु अगले नग रँजा जिय ।



नछ्मी, दूवगा,सबस्रती रूमू  
हम नाज अहीक छी,रौटा निय ।  
सबन रार्फिक रँहव,रूप-12

ई बचसाव अणम मतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव पठाउ ।



१. **बिनीता मा**- रवदास/ तय्योकु दिसम पव २. **शान्ति लक्ष्मी टोडवी**- मतिभ्रम ३. **शैलानिका रया**- अहाँक गाम कतअ अछि ? / पाहन अप्पन प्राण भेन ।



१



**बिनीता मा**

रवदास/ तय्योकु दिसम पव

१

**रवदास**

भोव भेन हे सखी  
ऊँचू लोअी आनी हुन  
आँउ सजारी माँ जानकीकँ  
आँउ कवि हिसक श्रुँगाव  
आँउ शीशि मूका गुँजा कवी  
आँउ सरँ गिन म्मारी  
जानकी जगदिसमक लोहव  
आँउ कवी हम सरँ प्रार्थना  
आँउ नीक आचवपसँ



## 547X VIDEHA

करियेन हुनक सन्धान  
जागत पागत कए दुव भारणसँ  
उठए ठुट अहि माष्टिक सतान  
रिग्याक होगक रस दिमाग मे  
कनम गव होगक सरकँ दिमाग  
अनपूर्णा बहथ तंडाव मे  
नम्रता रसत आगिब द्वाव मे  
रसन बह खेत खजियाग  
सभक टित होगक खुशी  
ले का होगक उंदस दुखी  
कवणी सभक हूँ उकेरु  
रौली मिठगव मिथी सन  
द्वय कलेशिक भारणसँ  
उंगव होगत हिनक सभ सतान  
हे जानकी हम माँगए छी  
अपना मिथिना जेन  
अहसँ रस यैह रवदान

२

## तय्यारु दिरम गव

जुनि खाँ गुठका यो रारु  
बिया गता की सीखत आगु

शैलीसँ सठदमि दूह फेक  
तय्यारुक अहाँ मेरन डोक

धुआँ सग जेँ नित केन युष्ठाणी  
रिगवत अहाँक जिनगीक सिहानी

हमा कोख की देनक ककरो  
किये भवम मे छी सभ सगरो

रसन किअक छी ओकव गुनाम  
जे रिगठि देत रस ठागहि ठाग

२





शोभि नक्का टोडवी

## मतिञ्जम

की अपना मोन मे तोवा छौ अ मतिञ्जम  
जे तोवा देह मे रूम छौ अम्मन मर्द ?  
त स्वप्न मय, तोहव गुणतव छौ नामर्दो म कय  
ले पतीत ! मतिञ्जमी नवाकय  
ज तोवा अहि मय रूत छौ गुफा/स्पर्मा  
अपल मय मति के ज द सकेत छै तू जग  
नहि लोडु गरि म एना उंसे  
दूथ  
पाट रूखक टोवी, 'गुर्जा या' के क रूनकोव  
नहि रूम अपनाके अम्मन मर्दक अरताव  
स्त्रीगण आक थू क देतो खखाव दूह पव थूकि  
तोहव एहि मतिञ्जम पव ककरो देतो थूग उठा मुति  
पगु मे रूचन होगत छै किछ अतर्कण  
नीक रोजायक धान  
तोहव कर्म म कियो हेते कोला मर्दक मुवीक अरनती  
जूमि रूम तु मियायो अपनाके मर्द जातिक प्रतिगीधी  
मर्दमे होगत छै मर्दान, मयम आउव नील  
टिहते छथि ओ की जी रिउसे आ की अन्नोव  
नहिये त सकेत छै तू कोला कर्षे नामर्द  
जकवा डारीमे थूके छै नीक-रोजायक मर्द  
प्रप्रति केनय होगह कोला अगम तहू हूका म्कीण  
दूदा हूकामे बहेत उगहित गाग-मिष्ठागक टिह  
नहिये त सकेत छै तू मर्द-नामर्दक रीचक रिक्कण  
अपन कामाक्षिक आगिमे जवन तू रूचन एहेन ककण  
तोवा न नावीदेह अछि रूम योष अगक मरुच  
भोगरामनाक सबम रौडु डडुड  
कामेभोगक मतिञ्जम होगत बहे छौ तोवा मदिखन  
मिजीर रौडु, रणस्पती, थूगी-जीरण  
रीन, पीन, घुटी  
माहयोषी मे अरशेय जोडन खानी मीमी रा फूटी  
भोगेक मतिञ्जम होगत छौ तोवा लरौ-आम-रूचक रौती  
मर्द तकेत बहेत छै तू स्त्रीयक थाथी  
गदही, योड ी, तैम, रूकवी, कूती, रिनाय  
मगह जग देय रानी अपन मय  
तोवा ले त उडु छियो रूचि रूठीक मरूव  
जे कामाक्षिक आगिमे आथि फूटि त गेलो अह



उना करिपिलीगण जसभ रात कहैत एथला छथि धखाग  
रूदा जूँ कँठमे हाथ दय छै तँ सए गप्पा सुनि जे आग

३



**शेखारिका रणा**

अहाँक गाम कतऽ अछि ?

अहाँक गाम कतऽ अछि  
प्रश्न सुनिते अकचका गेलौं हम  
कसिक कान मोटैत ---  
हमर गाम ? ?  
रएह ल जग ठाम अणन घर होग छै ?  
हँ हँ रएह घर ,रएह गाम !  
हमरा तैँ दुँ थी गाम अछि ..  
एकठी जतऽ मँ हम अएन छी  
दोसर हम जतऽ एलौं अछि  
रूदा, एमे हमर कोन अछि  
हम लैँ बुनेँ छी जतऽ मँ हम एलौं

उतऽ मँ सलस-रौबी दऽ हमरा रिदा  
कऽ देन गेल "जाह अणन घर रौपी"  
जग ठाम अएन छी उगठाम सभ  
सलस-रौबी रिहल गेल  
"कसियाक गाममँ अएन छै"  
हम की जानऽ गेलौं हमर गाम कोन थीक  
हमरा नाम पर तँ कतौ किछ लै  
भवन-पुवन घरमे हमर अछिह किछ लै  
रँस "हमना गामरानी" रँसि बहि गेलौं  
जग ठाममँ अएन छलौं  
उग गामक ठप्पा रँसन बहि गेलौं.....

**गालस अणन थीं भेव !**



547X VIDEHA

महबि बहन लाव नीबर  
बिधिक अछिठि बिधान भेन  
कोन गीत गारि गोरौ  
पाहन अप्पन प्राण भेन !

खड खड जीरन जिरोत  
झण झण तान भेन  
पात पात हाम हमार  
पाहन अप्पन प्राण भेन

मनय परन रोग मन  
मिहरोत कपेत चान भेन  
चपन दूकाक तबीमे  
पाहन अप्पन प्राण भेन

भल्लावक सुब साजि  
रथा बिगलित गान भेन  
मन लावसँ पाठन  
पाहन अप्पन प्राण भेन..

ई बलापर अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर पाठ ।



अमित मलिक

गजन

आरि नहि डै केउ ग्राम मे के ल कह डै  
दुदा जते भेठे डै योका गर्दन के ल लेठे डै

मजदुर दिसके अछि रँवाङ्ग अपन लोकनिके  
बुखक आगिमे जलेत लणनके के जे देखे डै

सभा भाषा सेगीवार आ सामने लेते पार्टी  
बस्ता घाँटे खैते एहन रँचाके के जे देखे डै

जाहि हाथ मे चानी कापी कितारि आ कनम



ठैना ठैलेत पलै छै हाथक ठैना के जे देथै छै

जोमे भवन रातेछै निखल हजार के हजार  
दुनु सम नहि जरे छै दूना के जे देथै छै... !

ई बचनाव अगम मंतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाउ ।



१. **राव रूद्र गौठक** - गजन २. **सुबेन्द्र मीन** - रूदा कवरै की ? / रैठैली/ नरका महेश्वरी/ दूनाड



१



**राव रूद्र गौठक**

गजन

रौद आ गिहाडि मँ जे मडन अछि एहि ठाम  
ओतरे गाछ सैय भन् रँचन अछि एहि ठाम

डुखन छैथ बाति दिस जाहि जेन गरीर सौ  
किनको खबिहासमे मडन अछि एहि ठाम

एहि छैकिकन हगमे री ए केल हाएत की  
एम ए क२ गाम गाम पडन अछि एहि ठाम

जे रिगतिमे धैर्य बाधि लागन अछि काजमे  
ओ नभमे टास रँनि मजन अछि एहि ठाम

अप्रुटाचारी शोसनमे रीकन सबकारी सँ  
दुस्री मारि लोक घने सुतन अछि एहि ठाम

गेन हग श्रैरालेँ माँ रीपक कोला मोले ले



बुँद पुवाण पुतसँ डवन अछि एहि ठाम

सवन राबिक रँहव ,आखव 17

५



स्वबन्धु शीन, (तदहव)दरभंगा(

झुदा कवरौ की ? / रँठैली/ बरका महेशीराणी/ दुहाड़

५

झुदा कवरौ की ?

टाक कात अहवार  
कोला राँठ नहिँ सुमय  
लैहव-सासुव  
कियो हान नहिँ पुछय  
अगल पंजारी मे रैसन अछि  
हमवा घब मे दरिद्रा पौसन अछि  
चेखरी सँठन बुखा  
ठाम-ठाम मकनअंगी  
दुड़ ीक नाम पव दुँ ठाँ रू  
सेहो चकन  
लैहवक पायन  
सेहो रसकी नागन  
तगपव जवनाहा  
अ चतवन बुखा  
घब सँ निकरितो  
कोँठ कँपेत अछि  
ओहना कनवा ककक  
बवहेव रँठी  
एखव - ओखव तकेत  
भौजी-भौजी करैत  
अंगला आरि जागत अछि  
सबबुखाँ ठैलल ल  
ठैनागत अछि  
हम सत बुँसेत डी



547X VIDEHA

रूदा कबरैक की ?  
पौट - उंदाव-रौनि मागय  
गिबहथक ओतय जागत डी  
हूककव रेष्टी मरु रौरुक  
नजबि पडि ते जेना मागय  
कियो सौंसे देह मे  
रौरुक कष्ट गड । बहन अछि  
ठहठहागत गुडक कातेकात  
रिडनी अगन सुय गड । बहन अछि  
पीज भवन घर पव  
गिबुआ सहसहा बहन अछि  
माथ मे किड हहागत अछि  
जी ओकिआय नलोत अछि  
रूदा कबरैक की ?  
आंग तँ हद भय गेल  
रौनि दैत कान  
मरु रौरुक हाथ  
किड आंग रैदा गेल  
मागय जे रिजनीक ताव  
कोला अंग मरु गेल  
भेन जे माक मँ माष्टि दी  
ल तँ दरिया मँ काष्टि दी  
परिस्थितिक मावलि  
ठादा ठहआयन डी  
रूदा कबरैक की ?

२

रैथेली

सुधि रिसवि रैथेली निम गडन,  
ठहियाय, थकि अछि भुमि गडन ।  
नहिं जानि कतेको कोस चनन,  
रैसन तकतव मरु लेश हसन ।  
रौदा मँ मागय देह मगव,  
उंनत ननाठ हूथ तेज प्रथव ।  
अछि कग एकव कन्दर्ग सनक,  
नठकन हनुन सधि सर्ग सनक ।  
अछि ननिष नयन हूथ टान सनक,  
मनुवाज हूथक हूथान सनक ।  
रनवाजक श्रीर, भवन डाती,



547X VIDEHA

कष्टे पृथु, जाँघ दुनकन हाथी ।  
टाकव कन्हा, तज्ज ह्यम्प मरन,  
चुप्लक सन खीचय लह नरन ।  
डुरि रसन रठैही लैष हभव,  
हवि जेनक रठैही टैष हभव ।  
मष मे हनाय निववो उदंड,  
तष मे धवाय पारक प्रोटंड ।  
धकधक कनेज तष काँपि बहन,  
नाजो नयनक पन नाँपि बहन ।  
ऊँठ जाग रठैही तेज अरन,  
ऊँमडन अघाढ़ घष्ट गेन उँमस ।  
मड गीत आँज मन्हाव रँनत ।  
रबिसत मिलाह बसधाव रहत ।

३

नरका महेश्वरी

बोना तूच पहाड़ १ यो ।  
नरका ह्य मे बोना डोड़,  
ज पृवणा अठै ॥ बोना ॥  
रौघपूँव के बोना डोड़,  
जौन-पैन्ट पहिक ।  
मगव रन्व बोना अथे कक,  
हे डमकधारी ॥ बोना ॥  
महमह सर्ग मघष रष डोड़,  
भस्म-कद्र वगु ।  
मोषक टेन गवा मे पहिक,  
हे गगधारी ॥ बोना ॥  
रुँढ रँवद केनाशेहि डोड़,  
"क्रान्ति" अमरारी ।  
जठै कठै जेन्ठनमैष रँनियो,  
ठैज -सुठधारी ॥ बोना ॥  
भागक गोमा बोना डोड़,  
द्विष्ठा हाथ धक ।  
सुवा माति विशुन के डोड़,  
हे पिसुठधारी ॥ बोना ॥  
एहिजे धष के टिन्ना डोड़,  
तिनकक माँग कक ।  
ठोवी रौप-दशो जूनि देखु,  
हे शिर त्रिपुधारी ॥ बोना ॥  
डैवर-डुत-गपादि के डोड़,  
हे शिर डयधारी ।



जोड़ । सभ बंगछे बाटे अछि,  
अतेकबे सग धक ॥ भोना ॥  
डीजे पब डायक के छोड़ू,  
चक्रव-यूनमावी ।  
रिना रौंड गोवी ले रियाहर,  
हे शिर मशिपारी ॥ भोना ॥  
ताडर नृम ममाण मे छोड़ू,  
डिफा-डामि कक ।  
शेन क्रमति मिथिना मति मोड़ू,  
हे रिपदाहावी ॥ भोना ॥

४

### चुहाड़

अछि कोश्टी मे ठाढ़ चुहाड़,  
काष्टि मेह बृष्टि जेत भवाड़ ।  
कय रेवि बृष्टि पुनि गेन पड़ाय,  
घुवि-घुवि आरय रिषु सकटाय ।  
जखन सिकन्दर रनि के आयन,  
बाजा गुक के बाहिं हवायन ।  
गोवी रनि धाउन गुजवात,  
नुष्टन कछु, भकट, तुजु सात ।  
सोमनाथ मन्दिर घुमि गेन,  
तोड़ि महादेव सभ बृष्टि जेन ।  
पृथ्वीबाजक शोडनक लेन,  
नहिं भेष्टन एकवा मल टेन ।  
बाँरव रनि के आरि समायन,  
हति हेमु सत्रा हथियायन ।  
पुनि धेनक रनिया केव भेय,  
ठुष्टन मिय ले टौकन देशे ।  
मायक पयव मे जकवन रेवि,  
जे गिबहथनी से भेजि टेवि ।  
गोवका मालिक, देशे गुनाम,  
पुवखा टाकव, देधि सनाम ।  
घुवि आयन रनि निगम घवाणा,  
नुष्टि बहन अछि हमर खजाणा ।  
जै रहुकपिया अछि बृष्टिहावा,  
पवम टाँ रौडका हँसियावा ।  
धन नुष्टत धरिहँ सभ नुष्टत,  
गळ्ळति सग धरोहरि नुष्टत ।  
पाण, मथान, मधुव सभ नुष्टत,  
अपणा धावक भाकव नुष्टत ।  
जे जल गारय एकव गीत,





से पवच्छा पवम पतीत ।  
उठु यो रौखा उठु यो लैया,  
होव घुवि आगत केम कसया ।  
एकवा हूँत मे उठु क नगाउ,  
कुव खेत चुगना मडकाउ ।

**ई बचनपव अपन मंतर ggaj endr a@vi deha.com पव पठाउ ।**

विदेह नूतन अंक गद्य-पद्य भावती

१. **मोहनदाम (दीर्घकथा):** अखक उदय शकशि (मुन हिन्दीसँ मैथिलीमे अगुवाद रिणीत उंपेन)

मोहनदाम (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदाम (मैथिली-मिथिलाक्षर)

मोहनदाम (मैथिली-ब्रैल)

२. **डिगमञ्जा-** प्रभा खेतमक हिन्दी उपनामक सुश्रीवा मा द्वारा मैथिली अगुवाद

डिगमञ्जा

३. **कनकमणि दीक्षित** मुन लपारसँ मैथिली अगुवाद त्रीमती कगा श्रीक आ त्री श्रीकन्द प्रेमर्षि)

भगत रेंडक देम-भुमा

४. **तुकाराम बामा** शैष्टक कोकशी उपनामक मैथिली अगुवाद डॉ. शिशु कमार सिंह द्वारा  
पाथला

रौनारण प्रते

**रैछा लोकनि द्वारा स्वर्गीय श्लोक**

१. प्रीतः कान लँकहृत् (सुर्योदयक एक यंठी पहिले) सरप्रथम अपन दुनु हाथ देखरौक चाली, आ ग  
श्लोक रँजरौक चाली ।

कवाथे रसते नक्ष्त्रीः कवमण्यु सबन्नती ।

कवमुने प्रितो लँका प्रभाते कवदर्शनम् ॥



कवक आगाँ लक्ष्मी रँसैत छथि, कवक मध्यमे सबस्यती, कवक मुनमे जँना स्थित छथि । भोवमे तारि द्वारा कवक दर्शन कवरौक थीक ।

२.संध्या काल दीप जेसरोक काल-

दीपमूले स्थितो जँना दीपमन्त्र जणार्दनः ।

दीपाग्रे शिखरः प्राकृतः संध्याज्यातिर्गमोऽस्तुते ॥

दीपक मुन भागमे जँना, दीपक मध्यभागमे जणार्दन (रिष्टु) आऽ दीपक अग्र भागमे शिखर स्थित छथि । हे संध्याज्याति ! अहाँकेँ षमकाव ।

३.सुतरौक काल-

वार्ग कर्ण हनुमन्तु रौषतेयं ब्रुकोदवम् ।

शेयले यः सरेह्विर्दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सभ दिन सुतरौसँ पहिले वाम, कर्मावस्त्रामी, हनुमान्, गकड आऽ तीमक साका करैत छथि, हुनकव दुःस्वप्न नष्टु भऽ जागत छहि ।

४. नहरोक समय-

गन्धै च यद्गले टैर गौदारवि सबस्यति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जनेऽसिन् सन्निधिं करु ॥

हे गर्गा, यद्गला, गौदारवी, सबस्यती, नर्मदा, सिङ्गु आऽ कारेवी धाव । एहि जनमे अणन साक्षिधा दिख ।

५.उत्तवै यसेद्गदशु हिमाद्रेश्चर दक्षिणम् ।

रथे तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्तुतिः ॥

सद्गदक उत्तवमे आऽ हिमाद्रेश्चर दक्षिणमे भावत अछि आऽ उत्तका सन्तुति भावती कहरोत छथि ।

६.अहम्या द्रौपदी सीता तावा मन्दादवी तथा ।

पशुकं वा सरेह्विर्दुःस्वप्नस्तु नष्टति ॥

जे सभ दिन अहम्या, द्रौपदी, सीता, तावा आऽ मन्दादवी, एहि पाँच साक्षी-स्त्रीक साका करैत छथि, हुनकव सभ पाप नष्टु भऽ जागत छहि ।

७.अश्विथोमा रँजिर्यासो हनुमन्तु रितीयाः ।

स्रपः पवश्वामशु सन्तुते टिक्कुरिणः ॥



अग्निथोमा, रँनि, राम, हनुमान्, रितीया, प्रपाचार्य आऽ पवश्रवाम- ङा सात ष्ठी टिबङ्गीरी कहरौत छथि ।

+साते भरतु सृष्टीता देरी शिखर रामिणी

उग्रेष तगमा अट्टा यया पशुपतिः पतिः ।

मिह्रिः सार्य सतामन्तु प्रसादान्तुधु धूर्जठैः

जाह्नरीकेषनेखेर यगुनि शेषिणः कना ॥

९. रौजोऽहं जगदामन्द न मे रौजा सबन्वती ।

अगुर्षे पचमे रवे र्णयामि जगत्त्रयम् ॥

१०. दुराहित मर्षेणन यजूर्देद अथाय २२, मत्रे २२)

आ अँल्लिबन्ध प्रजापतिवृद्धिः । तिंबोकता देरताः । सुवाङ्कृतिश्रुदः । यड्जः सुवः ॥

आ अँल्लं अँल्लो अँल्लरत्सी जायतामा वाष्ट्रे वाज्जुः शुनेऽगवराऽतिराधी महावथो जायतां दोष्ट्री  
प्रेष्वरौतमड्रानाशुः सष्टिः प्वक्त्रियोरा जिष्ठु वथेष्ट्याः सभेयो हराशु यज्जमानशु रीवो जायतां निकामे-  
निकामे नः पर्जन्ता रयित्तु फनरवा नऽवयवः पचस्तु योषोक्त्रयो नः कपताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थाः मिह्रयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मलोवथाः । शिवुर्णा र्छिशाशोऽस्तु मित्राणां हृदयस्तुर ।

ॐ दीर्घाश्रितर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगरान् । अणन देशेमे सुयोग्य आ सरीरु रिद्यार्थी उपेण ह्येथि, आ शुक्ले नशि कणिकाव सनिक  
उपेण ह्येथि । अणन देशेक गाय खुरि दुध दय रौनी, रँवद भाव रहण कवएमे सक्कम ह्येथि आ घोड्डा  
हुरित कर्षे दोगय रँना हेथे । स्त्रीगण नगवक लेह्रु कवरौमे सक्कम ह्येथि आ हरक सभामे ओज्जुर्णा  
भाषण देरँयरँना आ लेह्रु देरौमे सक्कम ह्येथि । अणन देशेमे जखन आरुष्टक होय रर्या हेथे आ  
ओयधिक-रुष्टी सरीरु पविगक्र होगत बहए । एरँ एमे सभ तवहेँ हमवा सभक कन्याण हेथे । शिवुक  
रुष्टिक नशि हेथे आ मित्रक उदय हेथे ॥

मन्त्रार्थे कोण रस्तुक गडा कवरौक टाली तकव रर्षि एहि मत्रेमे कएल गेल अछि ।

एहिमे राटकवृष्टापमानड्ड काव अछि ।

अणन-

अँल्लं - रिद्या आदि ग्रामँ पविर्णु अँल्ल

वाष्ट्रे - देशेमे

अँल्लरत्सी-अँल्ल रिद्याक तेजसँ हकत



547X VIDEHA

आ जगत- उंपेन होए

बाज्यः - बाजा

शुभे- रिना डव रैना

अथवा- राण चनेरामे निष्ठा

अतिराधी- शत्रुके ताका दय रैना

महाबधो- शैष बथ रैना रीव

दोष्ठी- कामला(दुख पूर्ण कवए रानी)

श्रेष्ठोत्तमद्वाराणः श्रेष्ठ- शौ रा राणी श्रेष्ठद्वारा- शैष रैवद शः - आशः - ह्वित

मष्टिः - घोड ।

शुभशुभो- शुभशुभ- शरहावके धाका कवए रानी शोरा- अत्री

जिष्णु- शत्रुके जीतए रैना

बधेष्टाः - बथ गव शिव

मन्त्रेष्टो- उत्तम मन्त्रामे

शराश- शरा जेहन

शजमानश- बाजाक बाजामे

रीनो- शत्रुके पबाजित कवए रैना

निकामे- निकामे- निश्चयशकत कार्यमे

नः - हमर मन्त्रक

शुभशुभो- शुभ

शर्यतु- शर्या होए

शरुणरवा- उत्तम शरुण रैना

शुभशुभः - शुभशुभः



पद्यसुता- पाकए

योगोक्तमो-अनन्त नन्त करेरीक हेतु कएन जेन योगक बक्सा

नः'-हमरा सत्तक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभुक्तक अक्षराद- हे जेहना, हमर बाज्यामे जेहना नीक धार्मिक रिवाज रैना, बाज्या-रीव,तीवदाज, दुष दए रैनी गाय, दोगय रैना जन्तु, उद्यमी नारी होथि । पार्जन्य आरथकता पठना पब रया देथि, फल देय रैना गाछ पाकए, हम सत्त संपत्ति अर्जित/संवर्धित कबी ।

विदेह नृत्य एक भाषापक बचनावेखन-

ग्लिनेकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-ग्लिने- प्रोजेक्टकेँ आगु रैद ठुँ, अपन स्वमार आ योगदान जे-  
मेन द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाँडु ।

**१.भावत आ लपोक मैथिली भाषा-ऐतनामिक लोकनि द्वारा रैनाओन मलक गेनी आ २.मैथिलीमे भाषा  
सम्पादन पाठक्रम**

**१.लपोक आ भावतक मैथिली भाषा-ऐतनामिक लोकनि द्वारा रैनाओन मलक गेनी**

**१.१. लपोक मैथिली भाषा ऐतनामिक लोकनि द्वारा रैनाओन मलक उँटाका आ लेखन गेनी**

(भाषाशास्त्री डा. बागारतार यादवक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सभ्य न२ निर्धारित)

**मैथिलीमे उँटाका तथा लेखन**

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावः पञ्चमाक्षरवास्तुगत ७, ए३, ए१, ए२, ए३ ए२ म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव  
शेदक अन्तमे जाहि रक्षक अक्षर बँहैत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-

अक्ष (क रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ७ आएन अछि । )

पञ्च (च रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ए३ आएन अछि । )

खञ्च (छ रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ए१ आएन अछि । )

सञ्चि (त रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ए२ आएन अछि । )

खञ्च (प रक्षक बहरीक कावणे अन्तमे ए३ आएन अछि । )

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अधिकशि जगहपब अक्षरावक  
प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पच, खड, सधि, खड आदि । राकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक



कहरँ छुनि जे करझ, चरझ आ ठरझसँ पुरि अघुस्राव लिखन जाए तथा तरझ आ परझसँ पुरि पञ्चमाक्षर लेखन जाए। जेना- अक, टटन, अडा, अस्तु तथा कम्पण। झुदा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि मालीत छथि। ओ लोकनि अस्तु आ कम्पणक जगहनपव सेहो अत आ कम्पण लिखेत देखन जागत छथि।

नरीन पछति किछु स्वरिधाजनक अरुष्ट छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक रँचत होगत छैक। झुदा कतोक रँव हस्तलेखन रा झुदामे अघुस्रावक जोठ सन रीन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि। अघुस्रावक प्रयोगमे उँचावा-दोषक समुहारना सेहो ततरेँ देखन जागत अछि। एतदर्थ कसँ न२ क२ परझ धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरँ उँचित अछि। यसँ न२ क२ त्रु धरिक अक्षरक सञ्ज अघुस्रावक प्रयोग कवरँसे कतहु कोना विवाद नहि देखन जागठ।

२.ठ आ ठ : ठक उँचावा "व ह" जकाँ होगत अछि। अतः जत२ "व ह" क उँचावा हो ओत२ मात्र ठ लिखन जाए। आष ठाम खाली ठ लिखन जाएरौक चली। जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेउँआ, ठसँ, ठेरी, ठाकनि, ठाँठ आदि।

ठ = गठ, गठ, गठरँ, गठरँ, मठरँ, रूठरँ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठ, पीठ आदि।

उँपह्यञ्ज शिष्ट, सभकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे ठ आ मवा तथा अस्तुमे ठ अरौत अछि। गह नियम ड आ डक सम्भर्त सेहो नागु होगत अछि।

३.र आ रँ : मैथिलीमे "र" क उँचावा रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकरा रँ कएमे नहि लिखन जाएरौक चली। जेना- उँचावा : रँणनाथ, रँद्या, नरँ, देरँता, रँष्टु, रँशि, रँदना आदि। एहि सभक स्थानपव फ्रमिः रँणनाथ, रँद्या, नर, देरता, रँष्टु, रँशि, रँदना लिखरौक चली। सामान्यतया र उँचावाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि। जेना- ओकीन, ओजह आदि।

४.य आ ज : कतहु-कतहु "य" क उँचावा "ज" जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकरा ज नहि लिखरौक चली। उँचावामे यरु, जदि, जझना, जूग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जाएरँना शिष्ट, सभकेँ फ्रमिः यरु, यदि, यझना, यग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चली।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि।

प्राचीन रतनी- कएन, जाए, हेएत, माए, भाए, गाए आदि।

नरीन रतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शिष्टक शुकमे ए मात्र अरौत अछि। जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि। एहि शिष्ट, सभक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरँक चली। यद्यपि मैथिलीभायी थाक सहित किछु जातिमे शिष्टक आबसामे "ए"केँ य कहि उँचावा कएन जागत अछि।

ए आ "य" क प्रयोगक सम्भर्तमे प्राचीन पछतिक अघुस्राव कवरँ उँपह्यञ्ज मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि। किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहताक रीत नहि अछि। आ



मैथिलीक सरसमाधारणक उँचावण-मौली यक अपेक्षा एमँ रौमी निकठ डैक । खाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शैलकेँ केन, हेरँ आदि कपमे कतहु-कतहु लिखन जाएरँ सेहो "ए"क प्रयोगकेँ रौमी समीपन प्रमाणीत करैत अछि ।

३. हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रकबामे कोला रौतपव रँन दैत कान शैलक पाछाँ हि, हु नगाउन जागत डैक । जेना- हुनकहि, अगनहु, ओकवहु, तकौनहि, टोष्टहि, आनहु आदि । ऋदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हुक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अगला, तकौले, टोष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उँचावण थ होगत अछि । जेना- यडलव (खडलव), सौडनी (थोडनी), यईकोण (थईकोण), बृषेण (बृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+ ध्रुमि-लोग : निम्नलिखित अरुन्नामे शैलसँ ध्रुमि-लोग भ२ जागत अछि:

(क) फ्रियावृयी प्रत्य अयमे य रा ए वृथु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँचावण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोग-सूटक छिने रा रिकारी ( / २) नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतौक ।

अपुर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतौक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतौक ।

(ख) पुरकानिक द्रुत आस (आए) प्रत्यमे य (ए) वृथु भ२ जागछ, ऋदा लोग-सूटक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पुर्ण कप : खाए (य) गेन, पठाए (ए) देरँ, नहाए (य) अएनाह ।

अपुर्ण कप : खा गेन, पठा देरँ, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य गक उँचावण फ्रियापद, सँज्ञा, ओ विशेषण तीणुमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप : दोसवि मारिणि छनि गेनि ।

अपुर्ण कप : दोसव मारिण छनि गेन ।

(घ) रतमान द्रुतसुक अश्रिम त वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप : पठैत अछि, रँजेत अछि, गरैत अछि ।

अपुर्ण कप : पठै अछि, रँजे अछि, गरै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरमान गक, उँक, एँक तथा लीकमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पुर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक, होगक ।



547X VIDEHA

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरिठै, होग।

(च) फ्रियापदीय प्रत्यय ह, हू तथा हकावक जोप भ२ जागड। जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गोनह, बहि।

अपूर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, गोन२, बग, बप्रि३, लै।

९. ध्रुनि आनासुवा : कोला-कोला सुब-ध्रुनि अपना जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम टनि जागत अछि। खास क२ दान्न ग आ उँक सङ्गमे ग रात नागु होगत अछि। मैथिलीकवा भ२ गोन शिष्टक मया रा अस्तमे जँ दान्न ग रा उँ आरैए तँ ओकव ध्रुनि आनासुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि। जेना- शैनि (शैगल), पानि (पागल), दानि (दागल), माष्टि (मागष्टि), काड (काडुड), मास्र (माडस) आदि। दूदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निअम नागु बहि होगत अछि। जेना- बमिकेँ बगम आ सुवाँशुकेँ सुवाँडस बहि कहन जा सकैत अछि।

१०. हनसु ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनसु ( )क आरथकता बहि होगत अछि। कावण जे शिष्टक अस्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि। दूदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनसु प्रयोग कएन जागत अछि। एहि शैथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सङ्गनि निअम अन्वसाव हनसुरिणी बाखन गोन अछि। दूदा बाकवण सङ्गनि प्रयोजक जेन आरथक आणव कतहू-कतहू हनसु देन गोन अछि। प्रसुत शैथीमे मैथिली लेखक प्राटिन आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीटिन पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्षि-रिगाम कएन गोन अछि। सुन आ समयमे रँटतक सभहि हस्त-लेख तथा तर्कनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिसारसँ रर्षि-रिगाम गिनाओन गोन अछि। रतिमान समयमे मैथिली माह्रभायी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक त्रान जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गोन अछि। तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेयता सभ कृषिठ बहि होगक, तादु दिस लेखक-मंडन सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बासांरताव यादरक कहरँ छनि जे सवनताक अन्वसङ्गामे एहन अरसु किमूह ल आरँर देरँक टाली जे भाषाक रिशेयता डौहमे पडि जाए।

-(भाषाशास्त्री डा. बासांरताव यादरक धाकाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ निर्धारित)

## १.२. मैथिली अकादमी, षटना द्वारा निरारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शिष्ट, मैथिली-साहित्यक प्राटिन कालसँ आग धरि जाहि रर्तनीमे प्राटनित अछि, से सामान्यतः ताहि रर्तनीमे निखन जाय- उँदहवणार्थ-

ग्राह

एख

ठास

जकव, तकव

तनिकव

अछि





547X VIDEHA

अग्रहास

अखल, अखलि, एखल, अखली

ठिमा, ठिना, ठिमा

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कर्पे ग्राह)

ईड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्प रैकपिकतया अणुनाउन जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भ४ गेन। जा बहन अडि, जाय बहन अडि, जाए बहन अडि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबए गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत अडि यथा कहनहि रा कहनहि।

४. 'ए' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अर्ग' तथा 'अर्उ' सदृश उच्चारण गष्ट हो। यथा- देखेत, डलैक, रौंखा, डौक गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिष्ट, एहि कर्पे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, गैह, उँह, लैह तथा दैह।

६. सन्ना गकावात शिष्टमे 'ग' के वृष्ट कवरँ सामान्यतः अग्रहास थिक। यथा- ग्राह देखि आरैह, मानिनि गेलि (मन्त्रय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र सन्ना 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चरणा अदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किन्तु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्पे 'ए' रा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अनाह, जाय रा जाए गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्ववक रीट जे 'य' ध्वनि स्वतः आरि जागत अडि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्पे देन जाय। यथा- धीखा, अठैखा, रिखाह, रा धीया, अठैया, रियाह।

९. सावर्णमिक स्वतंत्र स्ववक स्थान यथार्मभर 'ए' लिखन जाय रा सावर्णमिक स्वव। यथा:- मैएग, कनिएग, किवतनिएग रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्प ग्राह:- हाथकै, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अणुनाव सरँथा अज्य थिक। 'क' क रैकपिक कर्प 'केब' बाखन जा सकैत अडि।

११. पुरिकाजिक फ्रियागदक रौद 'कय' रा 'कए' अराय रैकपिक कर्पे नगाउन जा सकैत अडि। यथा:- देखि कय रा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय।

१३. अर्ह 'न' ओ अर्ह 'य' क रँदना अणुनाव बहि लिखन जाय, किन्तु भाषाक स्वरिवार्थ अर्ह 'उ' , 'ए' , तथा 'ण' क रँदना अणुनावो लिखन जा सकैत अडि। यथा:- अर्ह, रा अर्क, अर्जन रा अर्जन, कर्ठ रा कर्ठ।

१४. हर्नत टिन निश्चयतः नगाउन जाय, किन्तु रिभक्तिक रंग अकावात प्रयोग कएन जाय। यथा:- त्रीमान, किन्तु त्रीमानक।

१५. सब एकन कावक टिन शिष्टमे सँठा क लिखन जाय, सँठा क बहि, सँहाउ रिभक्तिक हेतु हवाक



लिखन जाय, यथा घब पवक ।

१३. अग्रनामिककेँ चन्द्ररिन्दू द्वारा रात्र कयन जाय । पर्वतु ऋदाक सुविचार्य हि समाण जष्टन मात्रापव अग्रनामिक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना है ।

११. पूर्ण विवाम पामीसँ ( । ) मुटित कयन जाय ।

१५. समस्त पद सँ क लिखन जाय, रा हागक्षणसँ जोडि क , हँ क बहि ।

१६. लिख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरनागवी कयमे बाखन जाय ।

२५. किछ धुनिक लेव नरीन चिह रँनराउव जाय । जा अ बहि रँनव अछि तँवत एहि दुनु धुनिक रँदना पुरिबत् अथ/ आथ/ अथ/ आथ/ आउ/ अउ विखन जाय । आकि ए रा ओ सँ रउ कयन जाय ।

ह.- लारिन्दू मा ११/०१/१३ श्रीकांत अरुण ११/०१/१३ सुरेन्द्र मा सुमन ११/०१/१३

## २. मैथिलीमे भाषा ससादन गार्थकय

### २.१. उँटाका निर्देशः (रौल कयन कग ज्ञाह):-

दनु न क उँटाकामे दाँतमे जीह सँठत- जेना रौजू नाम , ऋदा न क उँटाकामे जीह मुर्धामे सँठत (ले सँठैत उँ उँटाका दाय अछि)- जेना रौजू गणेशि । तानरा शिमे जीह तारुसँ , शिमे मुर्धामे आ दनु समे दाँतसँ सँठत । शिमाँ, सत आ शोका रौजि क२ देखु । मैथिलीमे श केँ रैदिक संयुत जकाँ थ सेहो उँटाकित कयन जागत अछि, जेना रयाँ, दाय । य अलको स्रणपव ज जकाँ उँटाकित होगत अछि आ न उँटाकित (यथा संयोग आ गणेशि संज्ञा) आ

गडसे उँटाकित होगत अछि । मैथिलीमे र क उँटाका इ ने क उँटाका स आ य क उँटाका ज सेहो होगत अछि ।

ओहिना ज्ञान ग रँशीकान मैथिलीमे पहिल रौजुन जागत अछि काका देरनागवीमे आ शिनिनाम्बरमे ज्ञान ग अम्बरक पहिल लिखला जागत आ रौजुला ज्ञारौक चाली । काका जे हिन्दीमे एकव दायपूर्ण उँटाका होगत अछि (लिखन उँ पहिल जागत अछि ऋदा रौजुन रौदमे जागत अछि), से शिखा पहलिक दायक काका हय सत ओक उँटाका दायपूर्ण उँगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँटाका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँटाका)

गँठि- ग हँ ग ट (उँटाका)

आरि अ आ ग ज ए एँ ओ उँ अ अः म एँ सत लेन मात्रा सेहो अछि, ऋदा एँमे ज एँ ओ उँ अ अः म केँ संज्ञाकार कयमे गनत कयमे प्रयाउ आ उँटाकित कयन जागत अछि । जेना म केँ वी कयमे उँटाकित करै । आ देखियौ- एँ लेन देखिओ क प्रयोग अग्रचित । ऋदा देखिँ लेन देखियौ अग्रचित । क सँ ह धवि अ समिलित लेनासँ क सँ ह रँलैत अछि, ऋदा उँटाका कान हनुप्र हाउ शिष्टक अन्तक उँटाकाक प्रवृत्ति रँठन अछि, ऋदा हय जखन मलाजमे ज अन्तमे रँजैत छी, तखला प्रकाका लोककेँ रँजैत सुनरँहि- मलाज२, रासुरमे ओ अ हाउ ज = ज रँजै छथि ।



ह्येव ङ्ग अङ्गि ज् आ ए३ क सहाङ्ग ऋदा गगत उँचावण होगत अङ्गि- गा । उँहिया ऋ अङ्गि क् आ य क सहाङ्ग ऋदा उँचावण होगत अङ्गि ङ् । ह्येव न् आ व क सहाङ्ग अङ्गि श्रै ( जेना श्रैयिक) आ स् आ व क सहाङ्ग अङ्गि स्र (जेना सिस्र) । ए भेन त+व ।

उँचावणक ऑडियो फागल विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगनङ्ग अङ्गि । ह्येव ङ् / सँ / गव पुर्र अक्कवसँ सँ क२ लिखु ऋदा ङ् / क२ ल्हा क२ । एये सँ ये गहिन सँ क२ लिखु आ रौदरौना ल्हा क२ । अकक रौद ङ् लिखु सँ क२ ऋदा अन्ग ङ्ग ङ् लिखु ल्हा क२ जेना

ङ्गल्लौ ऋदा सभ ङ् । ह्येव उँय य स्रातय सिन्धु- ङ्गय स्रातय लौ । यवरौदये रौदा ऋदा यवरौदये रादौ प्रयाङ्ग कक ।

बहए-

**बहै ऋदा सकेए (उँचावण सके-ए) ।**

ऋदा कथला कान बहए आ बहै ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कना जगहये गार्किंग कवरौक अन्गस बहै ओकरा । पृढनागव गता नागन जे दुग्दुग्ग नाम्ना ङ् ड्रागलव कनष्ट रसक गार्किंगये काज कवेत बहए ।

ङ्गल्लौ, ङ्गल्ले ये सेहो ए तवहक भेन । ङ्गल्ले क उँचावण ङ्गल्ले-ए सेहो ।

संयोगल- (उँचावण संयोगल)

ङ्गल्ले/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गग्ये लौ कक , गग्ये क२ सके ङ्गि । )

क (जेना वामक)

**वामक आ सँग (उँचावण वाम के / वाम क२ सेहो)**

**सँ- स२ (उँचावण)**

चन्द्ररिन्दु आ अघ्न्याव- अघ्न्यावये कँठ धरिक प्रयोग होगत अङ्गि ऋदा चन्द्ररिन्दुये लौ । चन्द्ररिन्दुये कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अङ्गि- जेना वामसँ- (उँचावण वाम स२) वामकेँ- (उँचावण वाम क२/ वाम के सेहो) ।

ङ्गल्ले जेना वामकेँ भेन हिन्दिक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दिक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दिक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दिक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गग्ये) ए० टाक शिद्द सँरहक प्रयोग अर्राङ्गित ।



547X VIDEHA

के दोसब अर्षे प्रयाङ्गु भ२ सकेए- जेना, के कहक ? रिभङ्गि "क" क रँदना एकव प्रयोग अरुञ्चित ।

बघि, बहि, ले, बग, बँग, बगँ, बगँ ए सतक उँचावण आ लेखन - ले

उँच क रँदनामे ब्रु जेना महुरूप (महउँचरूप ले) जतए अर्थ रँदनि जए ओतहि मात्र तीस अक्षरक सहायक प्रयोग उँचित । सप्तति- उँचावण स स ग त (सप्तति ले- काका सही उँचावण आसानीस ससुर ले) । ऋदा सरोत्तम (सरोत्तम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोढिये/ पोढि जेन/ पोढय जेन

पोढिये/ पोढय (अर्थ परिवर्तन) पोढय/ पोढि

ओ लोकनि ( हठी क२, ओ ये रिक्कबी ले)

ओअ ओहि

ओहिये/

ओहि जेन/ ओही व२

जएरौं बैसरो

गँचअयाँ

देधियोक/ (देधिओक ले- तहिना अ ये द्रव्य आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अरुञ्चित)

जकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

हेत / हत

बघि/ बहि/ बँग/ बगँ/ ले

सौसे/ सौसे

रँच /

रँच (सोबओव)

गाए (गाग बहि), ऋदा गागक दूब (गागक दूब ले । )

बहरोँ पहिबते

हमरी/ अरी



547X VIDEHA

सरै - सभ

सरैरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रात

रूमरै - समरै

रूमरौ/ समरौ/ रूमरहूँ - समरहूँ

हमरा आव - हम सभ

आकि- आ कि

सकैड/ कबैड (गद्यमे प्रयोगक आरथकता ले)

होअ/ होनि

जाअ (जानि ले, जेना देन जाअ) दूदा जानि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गअ/ जाअ

आड/ जाड/ आडु/ जाडु

मे, केँ, सँ, गव (मिहसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिहसँ सँ क२) दूदा दूरी रा रैसी रिभक्ति संग  
बहनागव पहिनि रिभक्ति ठाकेँ सँडु। जेना एमे सँ ।

एकरी , दूरी (दूदा क२ री)

रिकारीक प्रयोग मिहक अत्रुमे, रीचमे अनारथक कएँ ले। आकारान्त आ अत्रुमे अ क राँद रिकारीक  
प्रयोग ले (जेना दिअ

, आ/ दिअ , आ , आ ले )

अपेक्षणीयक प्रयोग रिकारीक रँदनामे कवरै अत्रुचित आ मात्र हर्षक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-  
उना रिकारीक संयुत क२ अत्रुग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूनु ठाय एकव जाग बहेत  
अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावामे जाग बहिते अछि)। दूदा अपेक्षणीय मेहो अत्रुजेजामे गमेसिर  
केसमे जागत अछि आ हँचमे मिहमे जतए एकव प्रयोग जागत अछि जेना *raison d'être*  
एतए मेहो एकव उँचावण बेजेस डेठव जागत अछि, माल अपेक्षणीय अरकामे ले दैत अछि रवण  
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकारीक रँदना देनाग तकनीकी कएँ मेहो अत्रुचित)।

अत्रुमे, एहिमे/ एमे

जअमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अत्रुथन

केँ (के नहि) मे (अत्रुवाव बहित)



547X VIDEHA

भर

मे

दर

ठँ (त२, त लै)

सँ (स२ स लै)

गाछ भव

गाछ वग

साँस खल

जो (जो go, करै जो do)

ते/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जथ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अथ जेना- ए कावा/ एसँ/ अगले/ रुदा एकव एकठी खास प्रयोग- वावति कतेक दिसँ कहैत बहैत अग

ले/वथ जेना लेसँ/ वगले/ ले दुखारे

नहँ/ लौ

लौलौ लौलौ लौलौ लौलौ लौलौ लौलौ लौलौ

जथ जाहि जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगथगाम/ जेगथगाम

एहि/ अहि

अग (बालक अतमे ब्राह्मण / ए)

अगछ/ अछि अछ

तथ तहि ते/ ताहि

ओहि/ ओग

सौथि/ सौथ

जीरि/ जीरी/ जीरै

बनेही/ बवहि



547X VIDEHA

तेँ/ तँग/ तँ

जापरँ/ जपरँ

नग/ न

ढग/ ढ

बहि/ ले/ बग

गग/ ले

डबि/ डबि ...

समय मेरँदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे छन्द  
था रिभक्ति जूठल छन्दे जना छन्देसँ, छन्देमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जरिग/ जाहिग/ जगग/ जेरग

एहि/ अहि/ अग/ अ

अगड/ अडि अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/

जीरँ

भने/ भनेही/

भवहि

तेँ/ तँग/ तँ

जापरँ/ जपरँ

नग/ न

ढग/ ढ

बहि/ ले/ बग



547X VIDEHA

गग/

लौ

डमि डमरि

टुकन थडि/ लोव गडि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्थक्रम

नीटाँक सूट्टीमे देव बिकम्पमेसँ लैंग्ज एडिटेव द्वावा कोष कप टुगव जेरौक टाली:

लौन्ड कथन कप त्राह:

१. होयरैना/ होरैयरैना/ होमयरैना/ हेरैरैना, हेमरैना/ होयरौक/होरैयरैना /होयरौक

२. थॉ / थॉ२

थॉ

३. क जेल/क२ जेल/कथ जेल/कथ जेल/न /न२/नय/नथ

४. ड' गेल/ड२ लोव/डय गेल/डथ

लोव

५. कव' गेल/कव२

गेल/कथ गेल/कथ गेल

६.

मिथ/दिथ मिथ ,दिथ ,मिथ ,दिथ /

७. कव' रैना/कव२ रैना/ कथ रैना कथरैना/क'व' रैना /

कथरैना

८. रैना रना (थुकथ), रानी (सूनी) ९

.

थॉड्व थॉग

१०. थॉय: थॉयल

११. दु: थ दुथ १

२. टलि गेल टव लोव/टेल गेल

१३. देवथिह देवकिह, देवथिन





547X VIDEHA

१४.

**देखवहि देखवनि/ देखवैह**

१३. **डबिह/ डवहि डबिष/ डबैष/ डवनि**

१३. **चवैत/चैत चवति/चैति**

११. **एथला**

**थथला**

१४.

**रैठनि रैठज रैठहि**

१६. **उ' /उ२(सरैगाग) उ**

२०

**. उ (सैयैजक) उ' /उ२**

२५. **फाणि/फाषि फागि/फागि**

२२.

**जे जे /जे२ २३. ना-शुबव ना-शुबव**

२४. **केवहि/केवनि/कवनिहि**

२३. **तथगत' / तथगत'**

२७. **जा**

**बलव/जय बलव/जय बलव**

२१. **निकवय/निकवय**

**वागव/ वगव रैलवाय/ रैलवाय वागव/ वगव निकव /रैलवै वागव**

२४. **उतय/ जतय जत' / उत' / जतय/ उतय**

२६.

**की शुबव जे कि शुबव जे**

३०. **जे जे /जे२**

३५. **कुदि / यदि(मोष गावरी) कुगद/यागद/कुद/याद/**

**यदि (मोष)**

३२. **ओलो ओलो**



547X VIDEHA

३३.

**हंस/ हंस हंस**

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सास-ससुव सास-ससुव

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.

**की की / कीर (दीधीकावास्तुमे २ ररिहित)**

३८. जराँरै जराँरै

३९. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दवाण दिगि दवाण दिगि/दवाण दिय

४१

**. लावाह गयवाह/गयवाह**

४२. किड आवा किड आवा/ किड आवा

४३. जाग छव/ जागत छव जाति छव/जेत छव

४४. गहुँटा जेठ जागत छव जेठ जाग छव/ गहुँटा जेठ जागत छव

४५.

**जराँन (शरा)/ जराँन(शोजी)**

४६. वय/ वय क / क२/ वय क३ / व२ क२/ व२ क३

४७. व /व२ क३/

**क३**

४८. एथन / एथल / अथन / अथल

४९.

**अलीकेँ अलीकेँ**

५०. गलीव गलीव

५१.

**धाव गाँव केनाथ धाव गाँव केनाथ/केनाथ**

५२. जेकाँ जेकाँ



547X VIDEHA

## झकाँ

३३. तहिन तैहिन

३४. एकर अकर

३५. रैहिन रैहिन

३६. रैहिन रैहिन

३७. रैहिन-रैहिन

## रैहिन-रैहिन

३८. नहि/ लै

३९. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

४०. तँ/ त २ तय/तय

४१. जैयारी ये जैय-जाय/जैय, जैय-जाय/जय

४२. गिनतीये दू जाय/जाय/जाय

४३. जै पौथी दू जाय/जाय/ जाय/ जय। यारत जारत

४४. माय ये / माय दूय जायक ययत

४५. देहि/ दय दय/ दयहि/ दयहि दहि/ दैहि

४६. द / दय/ दय

४७. उ (संयोजक) उय (सरन्याय)

४८. तका कय तकय तकय

४९. गैले (on foot) गैले कयक/ कैक

५०.

## तहिन तहिन

५१.

## गुनीक

५२.

रैजा कय कय / कय

५३. रैजाय/रैजाय

५४. कोवा



547X VIDEHA

१३.

**दिवका दिवका**

१३.

**ततस्मिँ**

११. गवरौउमहि/ गवरौवनि/

**गवरौवहि/ गवरौवनि**

११. रौव रौव

१२.

**तेह तेह(अशुक्र)**

+०. जे जे'

+१

. से/ के से/के'

+२. अशुक्रता अशुक्रता

+३. तुमिलार तुमिलार

+४. सुगव

/ सुगवका सुगव

+३. सठलक सठलक +३.

**तुमि**

+१. कवगयो/उ कलेयो ल देवक /कवियो-कवगयो

+१. तुमि

**तुमि**

+२. सगड १-साँछी

**सगड १-साँछी**

२०. गएल-गएल सौल-सौल

२१. खेवएरौक

२२. खेवएरौक



547X VIDEHA

२३. वगी

२४. लोष- लो लोष

२५. ब्रूसव ब्रूसव

२६.

**ब्रूसव (सर्वोपल अर्थमे)**

२७. येन यएह / अएह/ सेह/ सएह

२८. ताडिव

२९. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

३०. निन्न- निन्द

३१.

**बिबु बिब**

३२. जय जग

३३.

**जाव (in different sense)-last word of sentence**

३४. छत गव आदि जाव

३५.

**ल**

३६. खेवाय (pl ay) - खेवाव

३७. शिकावत- शिकायत

३८.

**ठग- ठग**

३९.

**. गठ- गठ**

४०. कनिअ/ कनिये कनिये

४१. वाकस- वाकगे

४२. लोष/ लोय लोष

४३. अडवन्त-



**547X VIDEHA**

**उक्त**

११४. बुँसेवहि (different meaning - got understand)

११५. बुँसएवहि/बुँसेवनि/ बुँसयवहि (understood himself)

११६. छलि- छव/ छवि लव

११७. खधाग- खथाय

११८.

**योल पाँचवबिह/ योल पाँचवबिनि/ योल पाँचवबिह**

११९. कैक- कएक- कएक

१२०.

**वग वग**

१२१. जवनाग

१२२. जवनाग जवनाग- जवनाग/

**जवनाग**

१२३. लोगत

१२४.

**गवरोवहि/ गवरोवनि गवरोवहि/ गवरोवनि**

१२५.

**छिबैत- (to test) छिबैत**

१२६. कवओ (willing to do) कवओ

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

**बिदेसव झामे/ बिदेसवे झामे**

१३०. कवरौजहूँ/ कवरौजहूँ/ कवरौजहूँ कवरौजहूँ

१३१.

**हाबिक (उठाव लोवक)**

१३२. ओज रज लोवमोच/ लोवमोच कागत/ कागच कागज



547X VIDEHA

१३३. थीसै भाग/ थीस-भास

१३४. निटा / निटाया/ निटाया

१३५. नपुं / ल

१३६. रैठा नपुं

(ल) निटा जाय

१३७. तखन ल (नपुं) कहेत थछि । कहे/ सुलै देखै छव नद कहेत-कहेत/ सुलैत-सुलैत/ देखैत-देखैत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कमांग-धमांग/ कमांग- धमांग

१४०

. वग वग

१४१. खेवांग (for playing)

१४२.

ठथिहा ठथिहा

१४३.

होंगत होंग

१४४. का कियो / केउ

१४५.

कमे (hair)

१४६.

कस (court-case)

१४७

. रैलगांग/ रैलगाया/ रैलगांग

१४८. जलगांग

१४९. ककरी कर्सी

१५०. चवटा चर्टा



**547X VIDEHA**

१३.१. कर्म कवय

१३.२. डुराँरै/ डुराँरौ/ डुराँरि डुराँरंग/ डुराँरै

१३.३. एथुलका/

**थुलका**

१३.४. वय/ विथय (राकाक थुलका मेरु)- वय

१३.५. कथनक/

**कवक**

१३.६. गवय गर्ग

१३.७

**बवदी बदी**

१३.८. सुना लोवाह सुना/ सुना२

१३.९. एनांग-लोनांग

१३.१०

**तेना ल घेववहि तेना ल घेववनि**

१३.११. नमि / ले

१३.१२

**चवो चवो**

१३.१३. कतहु/ कतौ कही

१३.१४. उंगविगव-उंगेवगव उंगवगव

१३.१५. भविगव

१३.१६. धोम/धोथम धोम

१३.१७. गग/गग

१३.१८

**के के**

१३.१९. दवरै/ दवरैजा

१३.२०. ठाय

१३.२१





**547X VIDEHA**

**धवि तरु**

११२.

**धुवि लोष्ट**

११३. खोबरेंक

११४. रेंड

११३. तौँ/ तूँ

११३. तौँहि( पद्यमे ग्राह)

१११. तौँली / तौँहि

११४.

**कबरौंअथ कबरौंअथे**

११६. एकैठी

१४०. कबितथि / कबतथि

१४१.

**गहँछि/ गहँच**

१४२. बाखनहि बखनहि/ बखननि

१४३.

**वगवहि/ वगवनि वागवहि**

१४४.

**बुनि (डँचावा बुण)**

१४३. थछि (डँचावण थगछ)

१४३. एवथि लोवथि

१४१. रिंतोल/ रिंतोल/

**रिंतोल**

१४४. कबरौंअनहि/ कबरौंअथि

**करेवथिह/ करेवथि**

१४६. करएनहि/ करेवनि

१६०.



547X VIDEHA

**आकि कि**

१७१. गहुँटा

**गहुँट**

१७२. रौती जवाय/ **जवाँ जवाँ** (आणि नगा)

१७३.

**से से**

१७४.

**होँ से होँ (होँसे होँ बिभक्तिसे लोँ कय)**

१७५. **खेव खेव**

१७६. **खुणव(spacious) खेव**

१७७. होयतहि/ होयतहि/ **होयतनि/होतनि/ होतहि**

१७८. **हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाएँ**

१७९. **खेका खेका**

२००. **देखाँ देखा**

२०१. **देखाँ**

२०२. **सतुवि सतुव**

२०३.

**साहेरँ साहेरँ**

२०४. **गोलैह/ लावहि/ लावनि**

२०५. **हेरौक/ होपरीक**

२०६. **केलो/ कएनहूँ/केलो/ केरुँ**

२०७. **किड न किड/**

**किड ल किड**

२०८. **घुमेनहूँ/ घुमओनहूँ/ घुमेनो**

२०९. **एनाक/ अएनाक**

२१०. **अः/ अह**

२११. **नय/**



547X VIDEHA

**वष (अर्थ-परिवर्तन) २१२ कर्नाक/ कलक**

२१३.सरोलक/ सलक

२१४.गिला२/ गिला

२१५.क२/ क

२१६.जा२/

**जा**

२१७.था२/ था

२१८.भ२ / भ ( फाँष्टक कमीक आतक)

२१९.नियम/ नियम

२२०

**.लेनईअवा/ लेनईयव**

२२१.गहिव अखर ठा/ रीदक/ रीचक ठ

२२२.तहि/तहिं/ तयि३/ तै

२२३.कहि/ कही

२२४.तँअ/

**तै / तँअ**

२२५.नँग/ नगँ नयि३/ नहि/ले

२२६.हे/ हए / एवोहै/

२२७.छयि३/ छै/ छैक /छग

२२८.दृष्टिअ/ दृष्टियै

२२९.थी (come)/ थी२(conj unct i on)

२३०.

**थी (conj unct i on)/ थी२(come)**

२३१.कला/ कोला/ कोना/कोना

२३२.गोलैह-गोवहि-गोवनि

२३३.होरोक- होएरोक

२३४.केलो- कएलो-कएनहू/केलो



**547X VIDEHA**

२३३. किड न किड- **किड ल किड**

२३७. केहेन- **केहन**

२३१. आर (come)-**आ (conjunction-and)/आ । आर-आर /आर-आर**

२३४. एत-**हेत**

२३६. युमेनह-**युमेनह- युमेनह**

२४०. एनक- **एनक**

२४९. होमि- **होमि/ होमि**

२४२. उ-बाग उ आगक रीट(conjunction), उर कहक (he said)/**उ**

२४३. की ह/ **कोसी एनी ह/ की हे । की हे**

२४४. दृष्टि/ **दृष्टि**

२४३.

**. गोमि/ गोमि**

२४७. ठै / **ठै/ ठै/ ठै**

२४१. जौ

**/ जौ जौ**

२४४. सभ/ **सभ**

२४६. सभक/ **सभक**

२३०. कहि/ **कहि**

२३९. कला/ **कोला/ कोलह**

२३२. **कबकरी भय गोव/ भय गोव/ भय गोव**

२३३. **कोना/ कोना/ कोना/कोना**

२३४. **अः/ अह**

२३३. **जले/ जल**

२३७. **गोमि/**

**गोमि (अर्थ परिवर्तन)**

२३१. **केवहि/ केवहि/ केवहि/**

२३४. **नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)**



547X VIDEHA

२३९. कर्षक/ कलक/कनी-यनी

२४०. गठवहि गठवनि/ गठवजल/ गपठउवहि/ गठवोवनि/

२४१. निशय/ नियम

२४२. हेबटथव/ हेबटथव

२४३. गलि वरुव वरुल ठा वीरुमे वरुल ठ

२४४. आकावाप्तमे रिंकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातरीक प्रयोग श्लाक तर्कीकी न्यूनताक परिचायक  
उकव रौदना अरुगल (रिंकारी) क प्रयोग उचित

२४५. केव (पगमे ज्ञाह) / -क/ क२/ के

२४६. ठैहि- ठहि

२४७. वलौष/ वलौषे

२४८. लौषत/ लषत

२४९. ज्ञाषत/ जषत/

२५०. आषत/ अषत/ आउत

२५१

. आषत/ अषत/ येत

२५२. लिअरौक/ लिअरौका/ लिअरौक

२५३. गुरु/ गुरुल

२५४. गुरुले/ गुरुष

२५५. अषतल/ अउतल/ एतल/ एतल

२५६. ज्ञाहि/ ज्ञाग/ ज्ञा/ ज्ञे/

२५७. ज्ञाषत/ ज्ञेत/ ज्ञाषत

२५८. आषव/ अषव

२५९. केक/ कषक

२६०. आषन/ अषन/ आषन

२६१. ज्ञाष/ ज्ञाष/ ज्ञा (नावति ज्ञाष नगनीह । )

२६२. गुरुषन/ गुरुषन

२६३. कर्षुआषन/ कर्षुअषन



२+४. ताहि/ तै/ तथ

२+३. गायरौ/ गाथरौ/ गथरौ

२+३. सकै/ सकथ/ सकथ

२+१. सेवा/सवा/ सवाथ (भात सवा गेल)

२+४. कहेत बखी/देखेत बखी/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- थलिना चलेत/ गठेत

(गठे-गठेत अर्थ कथला काव परिवर्तित) - आव बुसे/ बुसेत (बुसे/ बुसे छी/ रुदा बुसेत-बुसेत)/  
सकेत/ सकै। करेत/ करै। दे/ देत। डैक/ डै। रचलै/ रचलैक। बखरौ/ बखरौक। विथ/ विथ।  
वातिक/ वातिक बुसे/ बुसेत केव अण-अण जगलण प्रयोग समीपेन अछि। बुसेत-  
बुसेत आव बुसथि। लमछ बुसे छी।

२+२. दुथाव/ द्वाव

२+०. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२+५.

थन/ थन/ थना (लेव थन/ लेव थन)

२+२. तक/ धवि

२+३. ग२/ लौ (meaning different - जनरौ ग२)

२+४. म२/ सँ (रुदा द२, न२)

२+३. ७. त्र (तीन अक्षरक मेल रूदना प्रकृष्टिक एक अथि एकठा दोसबक उगयोग) अदिक रूदना ह्र  
आदि। मह७. ह्र/ मह७/ कर्ता/ कर्ता आदिये उ सहायक कोला आरथकता मैथिलीमे ले अछि। रउर

२+३. रौसी/ रौसी

२+१. रौना/ राना रौना/ रना (बहेरौना)

२+४

. रावी/ (रिद्वेरावी)

२+२. राती/ राती

३००. अत्रुवर्द्धिय/ अत्रुवर्द्धिय

३०५. लयथ/ लयथ

३०२. लयथ/ लयथ

३०२. वाली/ वाली (

लेठैत/ लेठैत)

३०३. वागव/ वागव



547X VIDEHA

३०४. लरौ/ लरौ

३०३. बाखयक/ बखयक

३०३. थी (come)/ थी (and)

३०१. पशुजाप/ पशुजाप

३०४. २ केव बरहाव मोड़क अत्रमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले ।

३०६. कहेत/ कहे

३००.

बह (भव)/ बहे (हवे) (meaning different)

३०५. तागति/ ताकति

३०२. खवाग/ खवारै

३०३. लौगा/ लौगि/ लौगि

३०४. जार्ति/ जार्ति

३०३. कागज/ कागज/ कागज

३०३. गिरे (meaning different - swallow)/ गिर (थस)

३०१. बहिय/ बहिय

DATE-LIST (year - 2012-13)

(१४२० बसवी साव (

**Marriage Days:**

Nov.2012- 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012- 5,9, 10, 13, 14

January 2013- 16, 17, 18, 23, 24, 31

Feb.2013- 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25

April 2013- 21, 22, 24, 26, 29

May 2013- 1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31

June 2013- 2,3



July 2013- 11, 14, 15

**Upanayana Days:**

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

**Dviragaman Din:**

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

**Mundan Din:**

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24

February 2013- 1, 14, 15, 20, 28

April 2013- 17

May 2013- 13, 23, 29

June 2013- 13, 19, 26, 27, 28

July 2013- 10, 15





## FESTIVALS OF MTHILA (2012-13)

- Mauna Panchami -08 July  
Madhushravani - 22 July  
Nag Panchami - 24 July  
Raksha Bandhan- 02 Aug  
Krishnastami - 10 August  
Kushi Amavasya / Somvari Vrat - 17 August  
Vishwakarma Pooja- 17 September  
Hartalika Teej - 18 September  
ChauthChandra-19 September  
Karma Dharma Ekadashi -26 September  
Indra Pooja Aarambh- 27 September  
Anant Caturdashi - 29 Sep  
Agastyarghadaan- 30 Sep  
Pitri Paksha begins - 30 Sep  
Jimootavahan Vrata/ Jitija-08 October  
Matri Navami - 09 October  
Somvati Amavasya Vrat - 15 October  
Kalashsthan- 16 October  
Belnauti - 20 October  
Patrika Pravesh- 21 October  
Mahastami - 22 October  
Maha Navami - 23 October



Vi j aya Dashami - 24 October  
Koj agar a- 29 Oct  
Dhanteras - 11 November  
Di yabati , shyama pooja -13 November  
Annakoota/ Govardhana Pooja -14 November  
Bhratri dwitiya/ Chitragnpta Pooja - 15 November  
Chhat hi -19 November  
Devotthan Ekadashi - 24 November  
ravi vratar ambh- 25 November  
Navanna parvan- 25 November  
Kartik Poor ni ma- Sama Visarjan- 28 November  
Vivaha Panchmi - 17 December  
Makar a/ Teela Sankranti -14 Jan  
Naraknavaran chaturdashi - 08 February  
Basant Panchami / Saraswati Pooja- 15 February  
Achha Saptmi - 17 February  
Mahashivaratri -10 March  
Holi kadahan-Fagua-26 March  
Holi - 28 March  
Varuni Trayodashi -07 April  
Chaiti navaratar ambh- 11 April  
Jurishital -15 April  
Chaiti Chhat hi vrata-16 April



547X VIDEHA

Ram Navami - 19 April

Ravi Br at Ant - 12 May

Akshaya Tritiya-13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri -bar asait - 08 June

Ganga Dashhar a-18 June

Somavati Amavasya Vr at a- 08 July

Jagannat h Rat h Yat ra- 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma-22 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.पत्रिकाक सब्ठा पुवान अंक ब्रैल-रिदेह ङ, तिवहूत आ देरणागरी कपमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह ङअंक ३.०पत्रिकाक पहिन -

रिदेह ङा सँ आगाँक अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi>

३.डियो संकलन आँ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio>

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos>



### ३. आधुनिक चित्रकला आ चित्र / मिथिला चित्रकला/ Mthila Painting/ Mbdern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**विदेहक एहि सब सल्लयोगी विकसल सेहो एक खेब जाउ ।**

३. विदेह मैथिली क्लिप :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. विदेह मैथिली जानबूत एग्रीजेशन :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अर्बुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. विदेहक पूर्व-कप "भावसरिक गाउ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. विदेह गडैयल :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. विदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. विदेह: सदेह : पहिल तिवहता (मिथिलाक) जानबूत (बैनांग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. विदेह:खेन: मैथिली खेनमे: पहिल खेब विदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१३. विदेह प्रथम मैथिली पारिभाषिक अ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्काइव

<http://videha-pothi.blogspot.com/>



१३. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका आडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१५. विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका चिथिना चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आर चिथिना (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन

<http://www.shruti-publication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendratyakur123.blogspot.com>


२४. मंगल खबर

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३. विदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२३.  [Videha Radio](http://videharadio.com)

२१.  [Join official Videha facebook group.](https://www.facebook.com/videhaofficial)

२५. विदेह मैथिली बाँध डमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६. समादिया



547X VIDEHA

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्लस

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अन्तरिहार आथर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-haikeu.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिअ

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली सगाओचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

**महत्त्वपूर्ण सूचना:** The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पॉम्फिक ई पत्रिका 'बिदेह' १३१ म अंक ०१ जून २०१३ (वर्ष ६ मास ६६ अंक १३१)

मासपत्रिका, ISSN 2229-

547X VIDEHA



बिदेह:अदेह:१: २: ३: ४:३:७:१:४:२९० "बिदेह"क छिष्ट संस्करण: बिदेह-३-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छनन बचना समिति।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to [shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



(c) २००४-१३. सर्पिकाव लेखकाधीन ँ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए सर्पादकाधीन । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ङ-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA सर्पादकः गजेन्द्र ठाकुर । सह-सर्पादकः उमेशे मडव । सहायक सर्पादकः निर कर्माव सा ँ कुमारी (मलाज कर्माव कर्पा) । लया-सर्पादकः नालेन्द्र कर्माव सा ँ पञ्जीकर विद्यानन्द सा । कव-सर्पादकः ज्ञाति सा लोधवी ँ वणि लेखा सिन्हा । सर्पादक-लोध-अनुषाः ल. जया कर्मा ँ ल. वज्जीर कर्माव कर्मा । सर्पादक- नाटक-वर्गमट-लवलि-लौस ठाकुर । सर्पादक- सुला-सर्पाक-समाद- पुनम मडव ँ धियका सा । सर्पादक- अनुवाद विभाग- लिखित उणेव ।

बलनाकाव अणन यौलिक ँ अलकाशित बलना (जकब यौलिकताक सर्पुर्ण उतुवदासिह लेखक पाक मया डहि) [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) के मेल अठेचमेषुक कर्माे .doc, .docx, .rtf रा .txt फर्माेठेमे पठा सकेत छुधि । बलनाक सर्ग बलनाकाव अणन सर्किसु पविचय ँ अणन क्कन कएन गेल ल्हाठे पठेतह, से आशि करेत डी । बलनाक अंतमे ठागण बहय, जे ङ बलना यौलिक अछि, ँ पहिन प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ङ पत्रिकाले देन जा बहन अछि । मेल प्रापु होयराक रौद यथार्मभर शीघ्रे ( सात दिनक लीतव) एकव प्रकाशिक अकक सुला देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका अछि ँ एमे मैथिली, संकृत ँ अण्रेजीमे मिथिना ँ मैथिलीसँ सर्पित बलना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ङ पत्रिकाले लीमति नक्का ठाकुर द्वावा मासक ०१ ँ १३ तिथिके ङ प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-13 सर्पिकाव सुवकित । रिदेहमे प्रकाशित सलठा बलना ँ आर्कागरक सर्पिकाव बलनाकाव ँ सर्गहकलुर्क नगमे डहि । बलनाक अनुवाद ँ पुनः प्रकाशिक किरा आर्कागरक उणयोंगक अणिकाव किराक हेतु [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब सर्पाक कक । एहि सागठके लीति सा ठाकुर, मधुलिका लोधवी ँ वणि धिया द्वावा डिजागण कएन गेल ।



सिंहिबडु

